चन्दामामा
अगस्त १९९१
4

Biku, John, Abik, Salim. All waiting for their birthdays. For their PORSCHE.
Mine was yesterday.
PORSCHE
SAMMO
CHANDAMAMA TOYTRONIX
Mfd. by :
Chandamama Toytronix Pvt. Ltd.
Chandamama Buildings,
188, NSK Salai, Vadapalani,
Madras - 600 026
Remote-Control PORSCHE Toy Car
• For the first time in India
• Indigenously manufactured
• Design from SAMMO of South Korea
FROM THE HOUSE OF CHANDAMAMA

बढ़ते पैरों का सच्चा साथी

MAGGI CLUBBERS FUN LOVERS
MAGGI
CLUB
मैगी क्लब से मुफ़्त उपहार पाओ, मौज-मस्ती के रंग जमाओ!
आओ बच्चो! मैगी क्लब में शामिल हो जाओ, सारे साल मौज मनाओ.
न्यूज़ लैटर्स, उपहार, गेम्स और मौज-मस्ती की कई अन्य चीज़ें...
बस तुम यह मैगी नूडल्स के
5 खाली रैपरों के सामने के हिस्से से काटकर हमें भेज दो.
और, साथ में अपना नाम, पता और अपनी पसंद का उपहार भी
लिख भेजना. हां, अगर तुम मैगी क्लब के सदस्य हो तो सदस्यता
संख्या भी ज़रूर लिखकर भेजना. और, अगर तुम मैगी क्लब के
सदस्य नहीं हो तो अब मौका मत चूकना. अपना विवरण भेजते
समय सदस्यता कार्ड भी मंगवा लेना. हम तुम्हारे उपहार
के साथ मैगी क्लब सदस्यता कार्ड भी मुफ़्त भेज देंगे!
हमारा पता है:
मैगी क्लब
पो. ओ. बॉक्स 5788
नई दिल्ली-110 055
'मैगी ऑप्रेशन वाइल्डलाइफ गेम' द्वारा वन्य प्राणियों की रक्षा करो.
'मैगी जादू जंगल' से अपना जंगल बनाओ.
आर्ची कॉमिक!
Archie
'मैगी किंग ऑफ़ दी जंगल गेम' में जंगल की सैर करो
KING OF THE JUNGLE
'मैगी बर्डहाउस' बनाओ
To Let
मुफ़्त! मैगी 'वर्ल्ड ऑफ़ एनीमल्स' चित्र पुस्तिका.
तुम जो 3 उपहार इकट्ठे करोगे
तो उनके साथ हम तुम्हें मुफ़्त
मैगी 'वर्ल्ड ऑफ़ एनीमल्स'
चित्र पुस्तिका भेजेंगे. उसमें
तुम्हें मिलेगी वन्य-प्राणियों
के बारे में दिलचस्प और
आश्चर्यजनक जानकारी.
हर गेम में पूरा विवरण
देख लेना.
MAGGI
2-Minute noodles
FAST TO COOK! GOOD TO EAT!
Name:
Membership no.:

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

सब से पहले धर्म

इस वर्ष के शुरू में अमरीका में एक सर्वेक्षण किया गया । उससे यह पता चला कि वहां के लोग मानवीय मूल्यों में धर्म और आस्था को सब से ऊंचा स्थान देते हैं । दूसरा स्थान वे स्वास्थ्य को देते हैं । इसके बाद ही शिक्षा और ज्ञान की बारी आती है, और अंत में संपत्ति की ।

संसार के इतने विकसित देश के लोगों की वरीयता के बारे में जानकर हमें हैरानी नहीं होनी चाहिए । १७७५-८३ के दौरान उन्होंने स्वतंत्रता-युद्ध लड़ा । इसके बाद उन्होंने अपने मूल देश से संबंध तोड़ लिये । लेकिन अमरीका की बस्तियों में जो लोग बसे, उन्होंने अपने क़ल्याण को ही अपने सामने रखा । अगले दो सौ वर्षों में उन्होंने राष्ट्रीय और निजी संपत्ति के अंतिम छोर को पा लिया, और कोई ताज्जुब नहीं कि अब उनका ध्यान धर्म और ईश्वर की ओर मुड़ चुका है ।

हमें स्वयं को विदेशी शासन से मुक्त हुए चवालीस वर्ष हो चुके हैं । पर हम हैं कहां? आओ, ज़रा अपने भूतपूर्व सर्वोच्च न्यायाधीश भगवती की भी सुनें कि उन्हें इस विषय में क्या कहना है । अभी हाल ही में उन्होंने बंबई में इस बात पर दु:ख प्रकट किया कि हम में से अधिकांश ने अपने देश के प्रति प्रेम को त्याग दिया है और सत्ता एवं संपत्ति को प्राप्त करने की होड़ में हमारे मूल्यों में भयानक गिरावट आयी है ।

लेकिन स्थिति ऐसी दयनीय नहीं है कि उसका कोई इलाज न हो । हां, शर्त यह है कि हमें अपनी थाती और परंपरा को याद रखना होगा और जो मूल्य हमारे ऋषि-मुनि और संतों ने दिये और जो पिछले पांच हज़ार वर्षों से विभिन्न कालों में हमारे साथ रहे, उन्हें ताज़ा करना होगा ।

वर्ष : ४३ | अगस्त १९९१ | अंक : १२

एक प्रति : रु. ४/- | वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

SUPER CHAMPS
COLLECTION
SCHEME
FREE
स्पोर्टस्टार
स्टिकर
सुपर मज़ा! सुपर इनाम!
24 स्टिकर इकट्ठे करो।
और जीतो शानदार उपहार।
हर नये 25 हाज़मोला कैन्डी 'सुपरचैम्प्स' पैक के भीतर है आपके मनपसंद स्पोर्टस्टार के स्टिकर। इमरान ख़ान, इवान लैंडल, स्टैफी ग्राफ़ और अन्य कई मशहूर खिलाड़ी।
5 स्टिकर 'इकट्ठे' करो और पाओ एक शानदार 'सुपरचैम्प्स' एलबम। इतना ही नहीं तुम हाज़मोला कैन्डी क्लब के सदस्य भी बन जाओगे। (विवरण प्रत्येक 'सुपरचैम्प्स' पैक के भीतर है)
जल्दी करो! अपना 'सुपरचैम्प्स' कलेक्शन आज ही शुरू कर दो!
Hajmola®
CANDY
SUPER CHAMPS
SURPRIZE
पहली 1000 पूरी एलबम भेजने वालों के लिए
Hajmola
everest/d91/DIL/69 hn
Khatti Meethi
Hajmola®
CANDY

बाधाएं तोड़ दी गयीं

बतर्ज़ लिबिया

मार्च के आखिरी दिनों में एक ऐसी घटना घटी जो बहुत महत्त्वपूर्ण थी, लेकिन जिसकी तरफ़ ज़्यादा ध्यान नहीं गया। यह घटना उत्तरी अफरीका में टोब्रुक के निकट घटी। वहां मिस्र और लिबिया के बीच एक द्वार था। कर्नल मुआमर गद्दाफी एक ट्रैक्टर पर सवार थे। उनकी इच्छा मिस्र में घुसपैठ करने की नहीं थी, बल्कि वह उस द्वार को ध्वस्त कर देना चाहते थे, क्योंकि वह दो देशों को एक-दूसरे से अलग किये हुए था। वह चाहते थे कि दोनों देशों के लोग बिना किसी रुकावट के इधर-उधर आ-जा सकें।

लिबियाई नेता के अनुसार यह एक सांकेतिक क्रियाकलाप था। इसका उद्देश्य 'उन कृत्रिम बाधाओं को हटाना था जो एक से लोगों और एक-सी भूमि के बीच खड़ी थीं'। यह उन अनेक उपायों में से एक उपाय था जिसके बारे में वह बराबर सोचते रहे थे और जिसे वह कार्य-रूप देना चाहते थे। उनका एक 'सपना' था और वह सपना था अरब देशों के एकीकरण का सपना।

गद्दाफी मिस्र के लोकप्रिय राष्ट्रपति कमाल अब्दुल नासर की अखिल-अरब राष्ट्रवादी नीतियों के भारी प्रशंसक थे। १९६९ में, जब से गद्दाफी ने एक रक्तहीन क्रांति के ज़रिये सत्ता संभाली थी और अंगरेज़ सेना को वहां से हटने के लिए मजबूर किया था, उनकी नज़रें एकीकृत अरब राष्ट्र पर थीं। १९७१ में उन्होंने सिरिया को रज़ामंद किया कि वह लिबिया से मिलकर एक संघ निर्मित करे। फिर उन्होंने मिस्र में विलीन होना चाहा। लेकिन वहां शासन दूसरे हाथों में चला गया था, क्योंकि नासर के बाद अनवर सादत ने बागडोर संभाल ली थी। यही प्रयास न केवल अफलीभूत रहा, बल्कि १९७७ में दोनों पड़ोसियों के बीच अल्पकालिक युद्ध छिड़ गया। यह आपसी दुश्मनी १९८१ में हुस्नी मुबारक के राष्ट्रपति बनने के बाद भी चलती रही।

इस दौरान कुछ अरब देश मिस्र का इसलिए बहिष्कार करते रहे कि उसने १९७९ में अरब-इज़राइल युद्ध के बाद अलग से एक समझौता कर लिया। लेकिन उधर हुस्नी मुबारक के प्रयास भी

जारी रहे और एक-एक करके ये देश मिस्र से अपने संबंध दृढ़ करते रहे । परिणाम स्वरूप १९८९ में मोरक्को में होने वाले शिखर अरब सम्मेलन में मिस्र को अरब लीग में फिर से ले लिया गया ।

फिर गद्दाफी और मुबारक में एक भेंट हुई जिससे आपसी संबंध और प्रगाढ़ हुए । अब वीसा की औपचारिकताएं खत्म कर दी गयीं, यातायात की पाबंदियां उड़ा दी गयीं और रेल-संपर्क की योजना तैयार कर ली गयी । इसका परिणाम बहुत सुखद हुआ, यानी दोनों देशों के बीच व्यापार ज़्यादा से ज़्यादा फूलने-फलने लगा ।

गद्दाफी दो वर्षों से इंतज़ार कर रहा था । अब जब कि लिबिया से अंगरेज़ सेना की रवानगी की २१ वीं वर्षगांठ मनायी जा रही थी, उसने उस द्वार को, जिसे उसने 'मिस्र और लिबिया के एक से लोगों के बीच खड़ा किया गया काल्पनिक द्वार' कहा था, मिस्मार कर दिया ।

उधर बर्लिन की दीवार टूटी है और उसके कुछ ही समय बाद यह घटना घटी है । बर्लिन की दीवार ने दो जर्मनियों को एक-दूसरे सेअलग कर रखा था । गद्दाफी की इस 'जाज्वल्यमान क्रियाशीलता' ने, शायद प्रचार की दुनिया इसे इसी नाम से पुकारना चाहे, उन आगामी घटनाओं की ओर इशारा किया है जब और-और देशों के बीच बाधाएं खत्म होंगी और काल्पनिक दीवारें टूटेंगी ।

Colonel Muammar Gaddafi
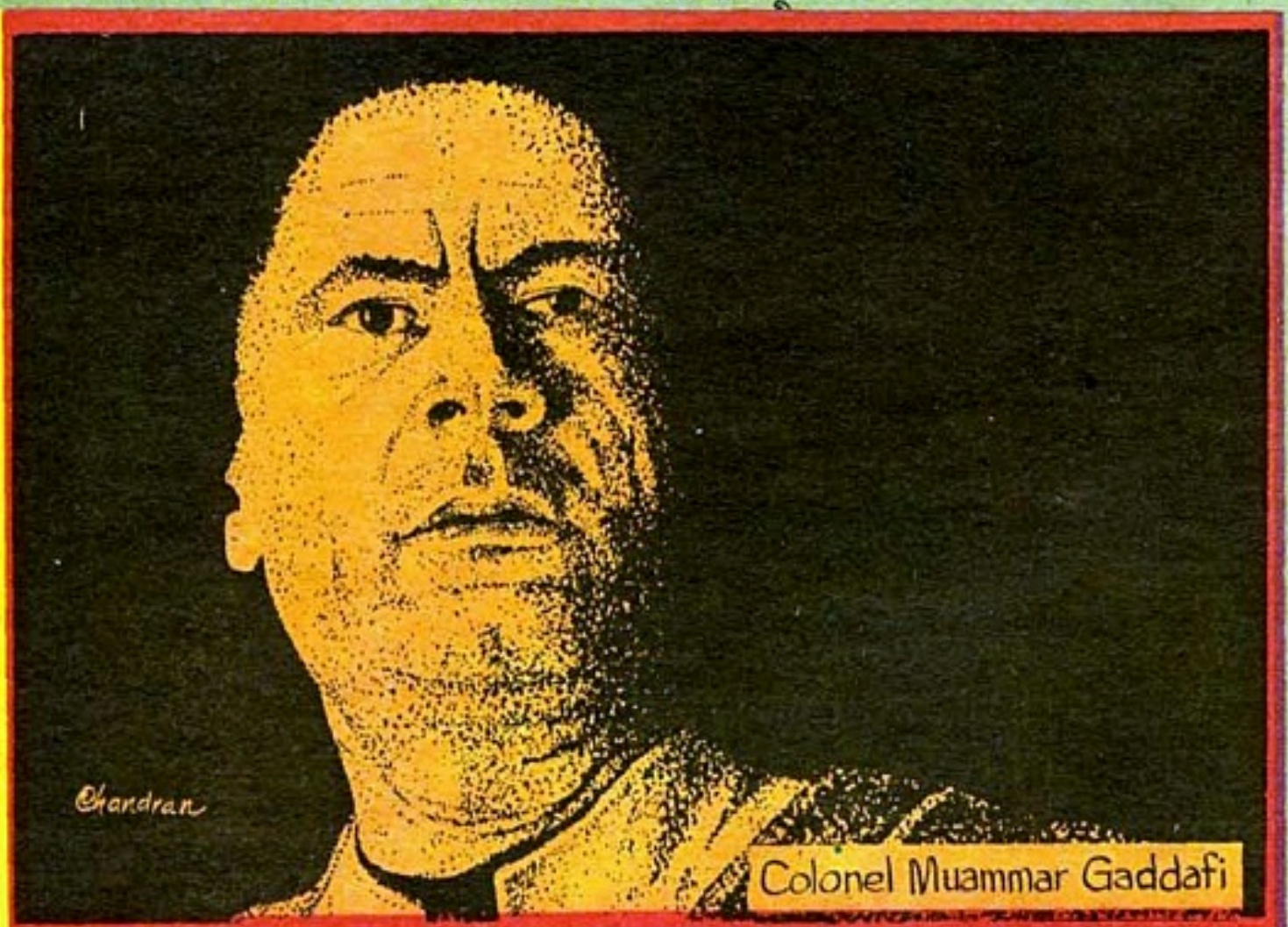
बंधु-बांधव

हमीरपुर में शीबू और चरनी नाम के पति-पत्नी रहते थे । उनके दो बच्चे थे – एक बोटा, एक बेटी । बेटा छः साल का था और बेटी चार साल की । शीबू अपने मां-बाप की इक्लौती संतान था । इसलिए उसके मां-बाप उसी के पास रहते थे । वह कचहरी में नौकर था । नौकरी अच्छी थी । फिर भी उसके पिता ने निठल्ले बैठना पसंद नहीं किया और उसने कुछ काम करना शुरू कर दिया । वह दो-चार बच्चों को घर पर ही पढ़ाता और पिछवाड़े में साग सब्ज़ियां उगाता । इस तरह शीबू की आय में वह खासा योग देता । शीबू की मां रूपवती, घर के काम में चरनी की खूब मदद करती ।

इस सब के बरवजूद चरनी नहीं चाहती थी कि उसके सास-ससुर वहीं उनके पास रहें । पति से चरनी बार-बार यही कहती कि वे अलग घर लेकर रहेंगे । पर शीबू उसकी बात पर कान नहीं धरता था ।

इसी बीच चरनी की छोटी बहन निम्मा की शादी हमीरपुर के ही एक युवक से हो गयी । उस युवक का नाम लीमन था । अपनी छोटी बहन, निम्मा को देखने एक बार चरनी उसके यहां गयी और वहां की रहन-सहन देखकर हैरान रह गयी । मकान में कुछ चार कमरे थे, पर वे छोटे थे । उतने में ही निम्मा, लीमन, लीमन के माता-पिता, लीमन की एक विधवा बहन और लीमन का एक जवान भाई सब रहते थे । इतना ही नहीं, लीमन के हमेशा अस्वस्थ रहने वाली नानी भी वहीं एक कमरे के कोने में, खटिया पर पड़ी दिखाई दी ।

निम्मा की सास ने जैसे ही चरनी को देखा, वैसे ही उसे दुलार से अपने गले से लगा लिया और फिर उसे अपने पास बिठाकर बोली, "बेटी, एक दिन तुम्हारी सास मंदिर में मिल गयी थी । वह तुम्हारी तारीफ करती नहीं

माधुरी भारद्वाज

अघाती थी । तुम्हारी बहन भी तुम्हारी जैसी ही सुशील है । उसे बहू के रूप में पाकर मैं बहुत खुश हूं ।"

चरनी अपनी बहन को पिछवाड़े में ले जाकर बोली, "क्यों री, यह सब क्या माजरा है? जिंदगी भर क्या तुम ऐसे ही पिसती रहोगी?"

निम्मा अपनी बड़ी बहन की बातें सुनकर सन्न रह गयी । वह कुछ कहने को हुई कि चरनी फिर बोली, "अभी तो सब ठीक है, पर जब मां बनोगी तब आटे-दाल का भाव पता चलेगा । बच्चों की कैं-कैं अलग, और बुड्ढा-बुड्ढी की खैं-खैं अलग । क्या तुम में इतनी ताकत है? मेरी मानो तो बहनोईजी को कहकर दूसरा घर ले लो । अलग रहोगी तो सब बखेड़ों से बची रहोगी ।"

निम्मा ने अपनी दीदी की बातों का कोई उत्तर नहीं दिया, लेकिन उसके मन में तरह-तरह के विचार उठने लगे ।

कुछ ही दिन बीते थे कि चरनी की सास ने खटिया पकड़ ली । परिणाम स्वरूप घर के सारे काम चरनी को ही करने पड़ते । चरनी कुढ़ उठी । एक दिन पति खाने के लिए बैठा तो इस पर झल्लाती हुई बोली, "क्या मेरे दस-बीस हाथ हैं? इस रोगी बुढ़िया की सेवा करते-करते तो मेरा हाल बेहाल हो गया है । तुम्हें कहती हूं कि हम अलग से रहेंगे तो तुम मेरी बात पर कान नहीं धरते ।" यही होगा कि इतने सब काम करते-करते मैं भी एक दिन लुढ़क जाऊंगी । तब तुम्हें होश आयेगी!"

पत्नी की जली-कटी सुनकर शीबू ताव में आ गया, बोला, "तुम हर वक्त अलग से रहने के लिए हो-हल्ला करती रहती हो । लेकिन जब रहने लगोगी तब तुम्हें असलियत का पता चलेगा, और तभी तुम्हारी बुद्धि ठिकाने आयेगी । आज मैं अलग मकान ढूंढ़ कर ही सांस लूंगा ।" और यह कहकर शीबू घर से बाहर चला गया ।

एक सप्ताह यों ही बीत गया । इस बीच शीबू ने नया मकान ढूंढ़ लिया था । शीबू, अपनी पत्नी और बच्चों समेत वहां रहने लगा । मकान की दायीं ओर मकान मालिक अपने परिवार के साथ रहता था । बायीं ओर एक किरायेदार था । बीच का हिस्सा शीबू के

पास था । मकान मालकिन का नाम गरिमा था और दूसरी किरायेदार का सुनीता । चरनी ने इन दोनों से दोस्ती गांठ ली थी ।

गरिमा के तेवर हमेशा चढ़े रहते । उसका पति भी उसकी मुंहज़ोरी के सामने चुप्पी लगा जाता । वह तो, दरअसल, उसके इशारों पर नाचता था । इस दंपति के दो बेटे थे । दोनों बड़े उद्दंड थे । उन्होंने सब की नाक में दम कर रखा था । लेकिन गरिमा उन्हें कुछ नहीं कहती थी, बल्कि उन्हें और सर पर चढ़ाती थी । इसलिए वे ज़्यादा शोर-शराबा करते ।

इधर सुनीता का स्वभाव गरिमा के स्वभाव के बिलकुल उलटा था । किसी के खिलाफ शिकायत करना तो वह जानती ही न थी । उम्र उसकी चरनी के बराबर ही थी, पर वह घर के सब काम-काज संभालती । इस पर भी, उसकी सास उस पर बरसती ही रहती और उसकी खाल उधेड़ने पर उतारू हो जाती । सास का भाई, यानी सुनीता के पति का मामा भी उसी घर में रहता था । वह तो सुनीता की हमेशा आलोचना करने की फिराक में ही रहता और सुनीता का पति मस्त-कलंदर बना रहता । झेलने को सुनीता जो थी!

चरनी को नये मकान में रहते दो महीने बीत गये थे । चरनी का बेटा शंकर भी अब गरिमा के बेटों के रंग-ढंग सीख गया था । वह स्कूल जाने से जी चुराने लगा था । इधर-उधर बेकार घूमता रहता और अपना वक्त बरबाद करता । पहले सास-ससुर के पास रहते थे तो ससुर, यानी दादा अपने पोते को नियमित रूप से पढ़ाता था, बल्कि जैसे ही वह खेल-कूदकर घर लौटता, वैसे ही वह उसे लेकर बैठ जाता । वह उसे कई प्रकार की कहानियां सुनाता जिससे पोते को पढ़ने में बड़ा मज़ा आता । पर अब शंकर ग़लत रास्ते पर चल पड़ा था और एक से एक बड़ी शरारत करता था ।

एक दिन कुछ सब्ज़ी खरीदकर जब चरनी अपने घर में दाखिल होने को हुई तब वह पड़ोस में सुनीता की चीखोपुकार सुनकर ठिठक गयी । फिर किसी तरह हिम्मत जुटाकर वह उनके यहां पहुंची तो देखा कि सुनीता का पति उसे किसी बात को लेकर पीट रहा है । उसने सुनीता को उसके पति से छुड़ाया और पति से बोली, "यह क्या

वहशीपन है! क्यों उसे पीट रहे हो?"

सुनीता की सास भी वहीं पास में ही खड़ी थी, और समूचा तमाशा देख रही थी । उसने फौरन दखल दिया, "तुम कौन होती हो यह सवाल करने वाली? यह उसकी बीवी है । उसका जो मन होगा, वह करेगा । तुम्हारे पति की तरह वह क़ायर और दब्बू नहीं है ।"

चरनी सुनीता की सास के कटाक्ष पर चौंकी, "क्या कहा आपने?" उसने उससे प्रश्न किया, "इस बार फिर कहिए तो!"

सुनीता की सास भी लड़ने पर आमादा थी । बोली, "एक बार नहीं, सौ बार कहूंगी । तुम्हारा पति कायर और दब्बू है । जो पति अपनी बीवी की बातों में आकर अपने बूढ़े मां-बाप को अकेला सड़ने को छोड़ सकता है, वह कायर और दब्बू नहीं तो और क्या है!"

चरनी को गुस्सा आ गया । "हम ने क्या उन्हें सड़ने को छोड़ दिया है! हमने तो उलटा उन्हें पूरी आज़ादी दी ताकि वे बेरोक-टोक अपना जीवन बिता सकें!" वह बोली ।

"बूढ़े लोगों को जब उनके हाल पर छोड़ दिया जाता है तो यह उनके लिए सड़ने के बराबर ही होता है," सुनीता की सास अपनी बात पर कायम थी ।

चरनी को अब दुःख हुआ । वह जल्दी अपने घर लौट आयी । तब तक उसका पति भी लौट चुका था । कचहरी में आज उसका काम जल्दी निबट गया था । पत्नी को देखते ही वह बोला, "एक ख़ुशख़बरी सुनाऊं? पिताजी के बहुत बड़ी दौलत हाथ लगी है!"

"वह कैसे?" चरनी एकाएक अपना दुःख भूल गयी ।

"हमारे घर में एक पुराना पलंग था न! वही जिस पर पिताजी अक्सर सोया करते थे । अचानक उसका एक पाया टूट गया । मरम्मत के लिए उसे खुलवाना पड़ा । बस, क्या देखते हैं कि उसके एक सुराख में से कई हीरे-मोती गिरने लगे हैं ।" शीबू ने सारी बात समझाते हुए कहा ।

"चलो, यह तो बहुत अच्छा हुआ । अब तो हम सब की ग़रीबी एकदम दूर हो गयी समझो! चलो, वापस अपने घर चलते हैं!"

"खूब!" शीबू ने फब्ती कसी, "वह घर कब से तुम्हारा अपना हो गया? अब पिताजी

के हाथ दौलत लग गयी है तो तुम्हारा उनके प्रति रवैया ही बदल गया है!''

पति की खरी-खरी सुनकर चरनी का चेहरा उतर गया । ठीक उसी समय वहां उसकी छोटी बहन, निम्मा, भी आ पहुंची । वह चरनी से बोली, ''दीदी, मैं तुम्हारी परेशानी समझ रही हूं । तुम सोच रही होगी कि इतने सारे झमेलों के बाद अब सास-ससुर को मुंह कैसे दिखाया जाये! यह तो बहुत आसान है । तुम दुखी मत होओ । हर सास-ससुर इसी इंतज़ार में रहते हैं कि कब उनकी बहू के बरताव में बदलाव आये और कब वह घर लौटे । सच्ची बात तो यह है कि यह समूचा नाटक मैंने और जीजाजी ने ही रचा था!''

''क्या मतलब? नाटक?'' चरनी ने हैरत से प्रश्न किया ।

''हां''निम्मा ने बात स्पष्ट करते हुए कहा, ''मैं देख रही थी कि तुम अपने लोगों से परहेज़ करती हो । उसका एक कारण यह भी हो सकता है कि तुम किसी-न-किसी तरह घर का सब कुछ अपने कब्ज़े में कर लेना चाहती थी । इसीलिए जीजाजी से कहकर मैंने कुछ समय के लिए तुम्हारा अलग रहने का इंतज़ाम करवाया । इससे कुछ भला ही हुआ है । हां, मौसाजी को दौलत मिलने वाली बात झूठ है । फिज़ूल की आकांक्षाएं मन में नहीं पालनी चाहिए ।''

चरनी के दिमाग में अब बात बैठ गयी । वह हंसती हुई बोली, ''हटाओ, ये सब बातें । ससुरजी को दौलत मिली है या नहीं, मेरा इससे कोई सरोकार नहीं । मेरी दौलत तो अब मेरा अनुभव है । मैंने अपनी आंखों देख लिया है कि कुछ घरों में भली से भली बहुओं को भी कैसे सताया जाता है । पर मेरी तो सब इज्ज़त करते थे ।.... दरअसल, मैंने अब जान लिया है कि सही दौलत अपने बंधु-बांधव ही हैं । उन से यदि प्यार मिल सके तो इससे बढ़कर और कोई दौलत नहीं ।...चलो, फौरन अपने घर चलें । अब हमें एक मिनट की भी देरी नहीं करनी चाहिए ।''

चोर के साथी

किसी ज़मींदार के यहां एक रात चोरी हो गयी । कई कीमती आभूषण ग़ायब हो गये । दूसरे दिन शहर में चुराये हुए आभूषणों को बेचने की कोशिश में ज़मींदार का नौकर रामू पकड़ा गया । पर यह काम अकेले रामू का नहीं हो सकता था । उसके संगी-साथी ज़रूर रहे होंगे । उनका पता लगाने की ज़मींदार ने भरसक कोशिश की, पर नाक़ामयाब रहा । रामू पर डराने-धमकाने का कोई असर नहीं हुआ । तब मजबूरी में रामू को तहखाने में डाल दिया गया ।

शाम हुई तो ज़मींदार का दीवान चुपके से रामू के पास तहखाने में पहुंचा और उससे बोला, "रामू, सच-सच सारी बात बता दो । मैं ज़मींदार से कहकर तुम्हारी सज़ा माफ करवा दूंगा । दरअसल, यह मैं अच्छी तरह जानता हूं कि तुम्हारे साथ और कौन-कौन हैं! तुम्हारे वे साथी कह रहे हैं कि असल में इस चोरी के पीछे तुम ही हो । तुम ही ने सारी योजना तैयार की थी ।"

यह सुनते ही रामू ताव में आ गया और बोला, "किसने कहा ऐसा?"

"कौन कहेगा? तुम्हारा वही मुंहलगा । क्या नाम है उसका? अरे, उसका नाम ज़बान पर आते-आते रह जाता है ।" दीवान ने नाटक किया ।

"मैं समझ गया । वही नालायक भीमल होगा! देख लूंगा उसे," रामू ने अपने दांत पीसे ।

"अरे नहीं, वह दूसरा है । फिर ज़बान से फिसल गया," दीवान का नाटक जारी था ।

"ठीक है, वह दगाबाज़ रूपम होगा! अब देखूंगा कैसे पहरेदारी करता है । कुचलकर रख दूंगा," रामू का क्रोध और ऊपर पहुंच गया था ।

"न, वह भी नहीं, वह तो...." दीवान के पैंतरे जारी थे ।

"फिर कौन होगा? चोरी तो हम तीनों ने की थी । अब यह कौन आ टपका बीच में? लगता है आप ने मुझ से सब कुछ उगलवाने की ही चाल चली थी ।" रामू दीवान की चाल देर से समझ गया था ।

अब तीनों साथी ज़मींदार की गिरफ्त में थे । सारे आभूषण उनसे बरामद किये जा चुके थे । उन्हें अपने किये की कड़ी सज़ा भी मिली ।

—कमला द्विवेदी

अपूर्व के पराक्रम

५

[अपूर्व के पराक्रम जारी थे । वह मानव जाति के दुःख-दर्द को दूर कर देना चाहता था । चाहे वह खुद बहुत नन्हा था, पर उसका हृदय बहुत विशाल था । वह इस धरती पर एक फरिश्ते के समान था । उसका जन्म भी तो एक हवन कुंड की अग्नि से मानव जाति के कल्याण के लिए हुआ था ।—अब आगे पढ़िए ।]

''पुत्र, तुमने तो ग़ज़ब कर दिया,'' मुनि सदानंद ने अपूर्व को साधुवाद देते हुए कहा । अब वह वापस हिम की गोद में अपने जन्म स्थल पर आया हुआ था । यहीं, इसी सदानंद मुनि ने हवन द्वारा अग्नि से उसे प्राप्त किया था ।

''जब से मैं इस संसार में पहुंचा हूं, तब से ही मैं एक समस्या के बाद दूसरी समस्या से जूझ रहा हूं । अब मैं चाहता हूं कि इस संसार को ज़रा आराम से देखूं । क्या यह उचित होगा?'' अपूर्व ने नम्र भाव से मुनि सदानंद से प्रश्न किया ।

''क्यों नहीं! लेकिन जहां कहीं भी जाओगे, तुम्हें इस संसार में ऐसी-ऐसी चीजें देखने को मिलेंगी, ऐसी-ऐसी स्थितियों का सामना करना पड़ेगा कि तुम ज़्यादा से ज़्यादा क्रियाशील होने के लिए प्रेरित होगे । इस संसार में सुख ही सुख होना चाहिए था, लेकिन मिला यहां दुःख ही दुःख है । इसका कारण मानव जाति का स्वार्थ और लोभ है । एक

दिन ऐसा आयेगा जब मानव को अपनी इस कमज़ोरी का एहसास होगा । वह जान जायेगा कि सुखी रहने के लिए सद्भावी होना और सच्चाई पर रहना कितना ज़रूरी है । तब तक वह गलतियां करेगा, और उनके परिणामस्वरूप कष्ट उठाकर ही कुछ सीखेगा । खैर, मेरे बहादुर बच्चे, अब तुम जाओ और इस संसार को आराम से देखो । लेकिन हां, जहां कहीं भी तुम्हें गड़बड़ नज़र आये, वहां अपना कर्त्तव्य करने से न चूकना । वैसे भी तुम इसे किये बिना रह भी नहीं सकोगे । तुम्हारी प्रकृति ही ऐसी है," मुनि सदानंद के शब्दों में बड़ा वज़न था ।

अपूर्व ने मुनि सदानंद के सम्मुख झुककर उसे प्रणाम किया और वहां से पहाड़ों को पार करता हुआ कुछ ही क्षणों में मैदानी इलाक़े में पहुंच गया । जैसे ही उसकी गति बढ़ी थी, वह पहले की तरह देखते-देखते अदृश्य हो गया था ।

* * *

शाम हो चुकी थी । उसे एक जगह काफी प्रकाश दिखा । यह रत्नपुर नाम के राज्य की राजधानी थी ।

अपूर्व भी वहां पहुंचा और लोगों के बीच भीड़ में जा खड़ा हुआ । दिन का प्रकाश क्योंकि धीरे-धीरे मिट रहा था, और अपूर्व भी नन्हा था, इसलिए उस भीड़ में से किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया ।

भीड़ के बीचोंबीच एक एलानची और एक ढ़ोल पीटने वाला खड़े थे । जैसे ही ढोल का पीटा जाना रुका, एलानची ने एलान किया, "सुनो, रत्नपुर राज्य के सभी लोग सुनो । आप सब जानते ही हैं कि महाराज की इकलौती संतान, यहां की राजकुमारी, काफी समय से बिस्तर से लगी हुई है । दवा-दारू का उस पर कोई असर नहीं होता । हमारे सभी चिकित्सकों ने अपनी पूरी कोशिश कर देखी है । अब जिस किसी को भी विश्वास हो कि वह राजकुमारी का इलाज कर सकता है, महाराज उसका स्वागत करेंगे । अगर वह अपनी कोशिश में कामयाब रहा तो उसे उसके वज़न के बराबर सोना भेंट किया जायेगा ।"

वह एलानची और ढोलची फिर आगे बढ़ गये । भीड़ भी छंट गयी । उनमें से कुछ

बिलकुल खामोशी से वहां से हट गये और कुछ अपने भाग्य को कोसते हुए, कि उनके पास इसका कोई उपाय नहीं ।

जब वहां से हर कोई हट गया तो दो व्यक्ति अब भी वहां मंडराते रहे । ताज्जुब की बात यह थी कि जहां हर कोई निराश होकर वहां से हटा था, वे दो व्यक्ति काफी-कुछ खुश नज़र आ रहे थे ।

"मैं तो इस एलान का इंतज़ार ही कर रहा था," उनमें से लंबे व्यक्ति ने कहा । उसकी दाढ़ी नुकीली थी और वह काली पगड़ी पहने हुए था । पर उसकी आंखें एक बहुत बड़े नाग की तरह जगती-बुझती थीं ।

"उस्ताद, जब राजकुमारी के इलाज के लिए जाओगे तो खूब जमकर खाकर जाना ताकि तुम्हारा वज़न खूब बढ़ जाये । उससे हमें ज़्यादा सोने की प्राप्ति होगी । बताओ, मैं गलत तो नहीं कह रहा?" उनमें से दूसरे ने कहा ।

उस दूसरे का कद छोटा था और उसकी मूंछें बेहद बड़ी थीं ।

"तुम वाकई बड़े होशियार हो, प्यारे कुंभांड । लेकिन अपने उस्ताद जादूगर सर्पकेतु से ज़्यादा होशियार नहीं हो । तुम क्या सोचते हो-मैं वह करतब सिर्फ सोना हालिस करने के लिए दिखाऊंगा?" सर्पकेतु ने सवाल किया ।

"तब और किस लिए?" कुंभांड ने सर्पकेतु से पूछा ।

"हा! हा! तुम जानते नहीं हो । तुम्हारा
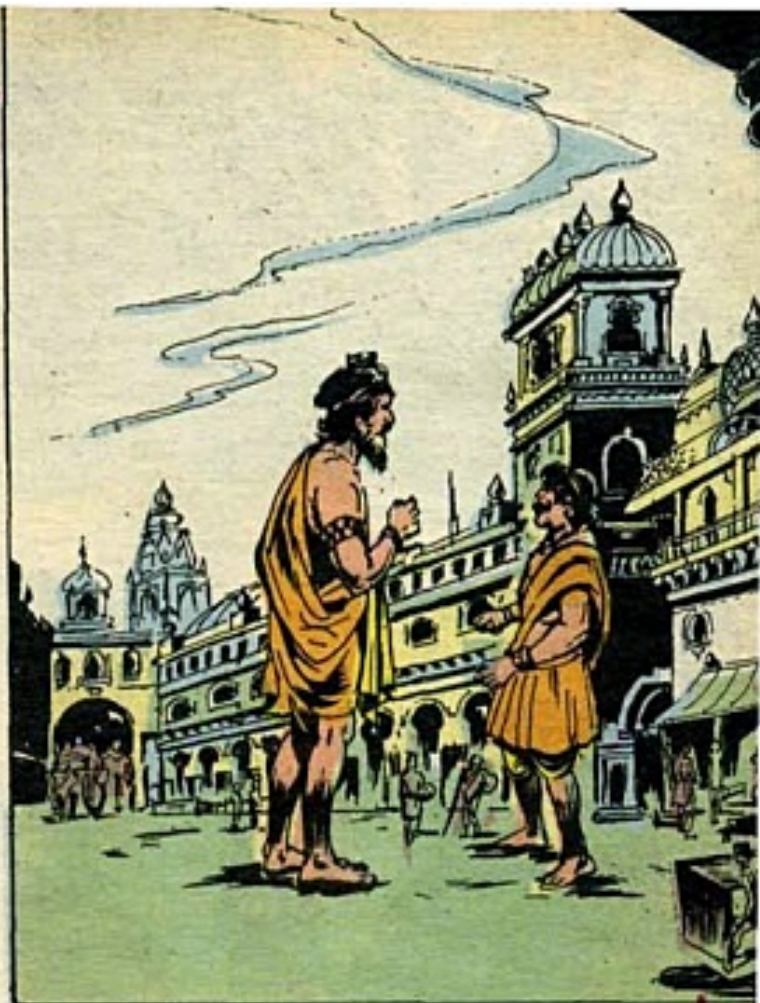
उस्ताद इस तमाम राज्य का स्वामी होने जा रहा है ।" सर्पकेतु ने आनंद से बाहें उछालते हुए कहा ।

"तब क्या सभी लोग तुम्हारे शागिर्द बन जायेंगे?" कुंभांड ने कुछ-कुछ डरते-डरते सवाल किया ।

"बेवकूफ, शागिर्द तो मेरे केवल तुम ही रहोगे । लेकिन बाकी लोग मेरी प्रजा बन जायेंगे । अब बात अक्ल में पड़ी कि नहीं?" सर्पकेतु ने अपने शागिर्द कुंभांड को फटकारते हुए पूछा ।

कुंभांड ने अपना माथा खुजलाया और इस प्रकार यह स्वीकार किया कि वह अपने उस्ताद की बात समझ नहीं पाया है ।

"सुनो!" सर्पकेतु ने फिर समझाते हुए

कहा, "राजा के केवल एक ही संतान है, और वह यह राजकुमारी ही है । ठीक है न?" सर्पकेतु ने पूछा ।

"ठीक है ।" कुंभांड ने बात समझने की कोशिश करते हुए कहा ।

"अब यह बताओ कि राजकुमारी का इलाज तब तक क्यों करूं जब तक राजा मुझे अपना दामाद बनाने के लिए तैयार न हो जाये । अब भी समझे कि नहीं?" हंसते हुए सर्पकेत ने पूछा ।

कुंभांड जैसे कि जादू से बंध गया । "क्या बात कही! मान गये उस्ताद कि आप महान् हैं, बिलकुल महान्!" उसने अपना सर हिलाया ।

"तुम क्या समझते थे मैं यों ही बेकार की बात करूंगा? मैं तो अवश्य महान् हूं, हां, महान् ही नहीं – महानतम हूं! समझे? ऐसे मुझ से महानतम व्यक्ति से तुम छोटी बात की उम्मीद कैसे कर सकते थे? अब मेरी बात ध्यान से सुनो । मैं राजा के साथ सौदेबाजी नहीं कर सकता । इसलिए उसकी ज़िम्मेदारी तुम्हारी है । तुम जाओ और जाकर राजा से भेंट करो । उसे बताओ कि जंगल में एक पवित्र बरगद का पेड़ है जो दुखी लोगों का दु:ख हरता है । राजा को चाहिए कि वह कल ही आधी रात के वक्त वहां जाये और वहां उस बरगद से प्रश्न करे । उस पेड़ को तो तुम जानते ही हो न?"

"हां, उस्ताद! वही बरगद का पेड़ न, जो नदी के किनारे है । जिसकी एक तरफ बहुत बड़ी बांबी है और दूसरी तरफ एक बियाबान मंदिर है । तुम एक बार उस पेड़ के खोल में छिपे थे और एक व्यापारी को तुम ने इस हद तक डरा दिया था कि वह अपनी सारी दौलत वहीं छोड़कर भाग खड़ा हुआ था ।" कुंभांड ने समझाया ।

"हां, ठीक वही है । राजा को उस पेड़ की स्थिति ठीक-ठीक समझा देना । राजा के पहुंचने से पहले ही वहां अच्छी तरह अपने को छिपा लेना । जब राजा पेड़ के सामने झुकेगा और फिर उसे प्रणाम करके अपनी दु:ख गाथा कहना शुरू करेगा, तुम उस समय बोलना शुरू कर देना । तुम्हारी आवाज़ काफी गंभीर होनी चाहिए," ज़ादूगर ने हिदायत दी ।

"मैं कहूंगा क्या, उस्तादा?" कुंभांड ने

सर्पकेतु से पूछा ।

"यही कहो कि इस बियाबान मंदिर में एक संन्यासी रहता है, और राजकुमारी तभी इस कष्ट से उबर पायेगी जब राजा अपनी बेटी का हाथ उसके हाथ में दे देगा । वरना वह मर जायेगी । तुम उसे विश्वास दिला दो कि उस संन्यासी द्वारा ही राजकुमारी नीरोग हो पाए गी, वरना नहीं । राजा मजबूर होकर तब मुझ से मिलेगा और मैं उसके साथ, राजकुमारी का इलाज करने, महल की ओर चल पड़ूंगा । फिर राजकुमारी से मैं पहले शादी कर लूंगा, तभी इलाज करना शुरू करूंगा ।" सर्पकेतु ने कहा ।

अब कुंभांड के मन में कोई संदेह आया । वह उसे दूर करना चाहता भी था ।

"उस्ताद, तुमने जो रोग राजकुमारी को लगाया है, उसका इलाज तो बहुत सीधा-सादा है । उसे तो केवल सुबह के वक्त एक गिलास-भर तुलसी के पत्तों का रस लेना होगा और शाम को बेल के पत्तों का रस । यह काम तो मैं भी कर सकता हूं । मुझे ही करने दो न! मैं तुम्हारे सहायक के नाते तुम्हारे साथ चलूंगा और राजकुमारी को चंगी कर दूंगा, और फिर तुम ठाठ से राजकुमारी से शादी कर लेना । इस तरह मैं भी राज महल में रहने का भाग्यशाली हो जाऊंगा । राजमहल से हम दोनों के ही घनिष्ठ संबंध हो जायेंगे ।" कुंभांड का यह सुझाव था ।

"इतना बढ़—चढ़कर मत आओ, कुंभांड! जब मैं राजा बन जाऊंगा तो तुम्हें अपना बना लूंगा! तुम आश्वस्त रहो न" – सर्पकेतु ने कहा ।

"क्या तुम मुझे बना लोगे अपना वज़ीर?" खुशी से कुंभांड उछला ।

लेकिन सर्पकेतु ने वही कहा जो वह उसे बनाना चाहता था, यानी अपना निजी सहायक । यह सुनकर कुंभांड का चेहरा उतर गया ।

"अब देर मत करो । सीधे राजमहल जाओ । मैं जंगल वापस चल दूंगा और वहां तुम्हारी उस मंदिर में राह देखूंगा ।" सर्पकेतु ने कहा ।

इतना कहकर सर्पकेतु वहां से जंगल के लिए लौट चला और कुंभांड राजमहल की तरफ चल दिया ।

बाद वहां पहुंचा और गुरु सर्पकेतु से बोला, "मैं अपना काम कर आया हूं,उस्ताद! राजा अकेला ही कल आधी रात को पेड़ के पास आयेगा ।"

"बढ़िया," जादूगर सर्पकेतु बोला, "अब जो-जो मैंने बताया था, उसको पक्का, करो । उसे बार-बार कहो । तुम्हें न एक शब्द ज़्यादा और न ही एक शब्द कम बोलना होगा ।" सर्पकेतु ने चेतावनी देते हुए अपनी बात खत्म की ।

* * *

रात अँधियारी थी और बादल भी छाये हुए थे । लेकिन राजा हिम्मत वाला था । वह किसी-न-किसी तरह उस अंधेरे में होता हुआ पेड़ के पास पहुंचा । अपने अंगरक्षक वह काफी पीछे छोड़ आया था ।

अपूर्व राजा के आने से पहले वहां पास ही के एक पेड़ पर चढ़ बैठा था ।

राजा के पहुंचने से लगभग एक घंटा पहले सर्पकेतु ने कुंभांड को अपनी आखिरी हिदायतें दीं । जब कुंभांड पेड़ पर चढ़कर उसके खोल में छिप गया तो सर्पकेतु मंदिर की ओर बढ़ गया ।

राजा अपने घोड़े पर से उतरा और बरगद के पेड़ के निकट गया । फिर, जैसा कि उसे बताया गया था, उसने झुककर पेड़ को प्रणाम किया और दु:खी स्वर में अपनी बेटी के कष्ट के बारे में कहने लगा, "ए पवित्र वृक्ष! मुझ पर दया करो और मुझे रास्ता दिखाओ कि मैं कैसे अपनी बेटी की जान बचाऊं ।"

अपूर्व ने यह सब सुन लिया था । वह दंग रह गया । उसका सारा गुस्सा सर्पकेतु पर उमड़ पड़ा था । कितना दुष्ट है यह! पहले इसने राजकुमारी को अस्वस्थ करने के लिए उस पर जादू का वार किया । अब यह उसका इलाज करना चाहता है, और वह इस शर्त पर कि वह इससे शादी करेगी!

अपूर्व ने जादूगर का पीछा किया । वह जंगल और वह उजड़ा मंदिर राजधानी से बहुत दूर न थे । उस उजड़े मंदिर के भीतर उस जादूगर सर्पकेतु ने बहुत कुछ जमा कर रखा था – इंसानों की खोपड़ियां, कई तरह के जानवरों की खालें तथा कई और अजीबोग़रीब चीज़ें ।

कुंभांड रात के दूसरे पहर बीतने के

"मुझे वाकई तुम पर दया आ रही है, हे राजन्!" उस पुराने पेड़ के खोल में से गूंजती हुई आवाज़ आयी जिसका प्रभाव वाकई बहुत तगड़ा था ।

राजा ने फिर झुककर प्रणाम किया और कहा, "धन्यवाद, वृक्ष देवता! अब तुम्हारी कृपा मुझ पर हो तो मेरी बेटी के स्वास्थ्य के लिए कोई उपाय बताओ ।"

"उपाय तो बहुत सरल है । पास के उस उजड़े मंदिर में जाओ । वहां तुम्हें एक जादूगर मिलेगा । वह बड़ा दुष्ट है । उसी ने तुम्हारी बेटी को रोगी बनाया है । उसे तुरंत पकड़कर अपने कब्ज़े में कर लो और उसका मुंह कसके बंद कर दो ताकि वह कोई और मंत्र न चला सके । फिर उसका सर उड़ा दो । इससे तुम्हारी बेटी का आधा रोग तो अपने आप चला जायेगा ।"

अपूर्व हैरान था । यह कुंभांड को क्या हो गया है! खैर, शैतान जादूगर को उसकी टक्कर का ही शागिर्द मिला था । वाकई, बड़ा होशियार है! उसने ऐसा तरीका खोज निकाला है जिस से जादूगर का मुंह हमेशा के लिए बंद हो जायेगा । उसे अपने शागिर्द की होशियारी का पता भी नहीं चल पायेगा!

राजा ने तीसरी बार झुककर पेड़ को प्रणाम किया और बोला, "मैं तुम्हारा आभारी हूं, हे पवित्र वृक्ष! अब कृपया मुझे यह बताओ कि मेरी बेटी की बाकी की आधी बीमारी कैसे जायेगी!"

अपूर्व की सांस रुकी हुई थी । वह इस

इंतज़ार में था कि अब देखें यह चालाक कुंभांड और क्या कहता है ।

"कल, सवेरे-सवेरे तुम्हारे महल के पूर्वी फाटक के पास से एक युवक निकलेगा । कद में वह थोड़ा छोटा है, लेकिन उसकी मूंछें खूब बड़ी-बड़ी हैं । तुम महल में उसे बुलवा लेना और उससे अनुनय करना कि वह तुम्हारी बेटी का इलाज करे । वह उसका इलाज तो कर देगा, लेकिन उस इलाज का असर तभी रह पायेगा जब तुम अपनी बेटी की उस से शादी कर दोगे । वह तुम्हारी बेटी के हर तरह से योग्य है ।"

"अपनी बेटी की ज़िंदगी के लिए मैं कुछ भी करने को तैयार हूं ।" राजा ने एक बार फिर उस पेड़ को प्रणाम किया ।

"राजन्, इंतज़ार करो । इतनी आसानी से उसके झांसे में न आ जाओ ।" अपूर्व पास के पेड़ से चिल्लाया । वह वहीं छिपा बैठा था । उसकी आवाज़ ग़जब का असर रखती थी । वह ठीक भीतर उतरती थी ।

राजा इंतज़ार करने लगा । वह बिलकुल भौंचक हो रहा था । अपूर्व ने दो पत्थरों को आपस में रगड़ा । उसमें से एक चिंगारी पैदा हुई । उसने उस चिंगारी से पेड़ की सूखी टहनियों को प्रज्वलित किया और फिर उन्हें बरगद के पेड़ के खले में फेंक दिया ।

"बचाओ, बचाओ मुझे!" कुंभांड उस पेड़ में से कूदता हुआ चिल्लाया ।

"इसे पकड़ लीजिए । यही वह दुल्हा है, बड़ी-बड़ी मूंछों वाला," अपूर्व ने कहा ।

कुंभांड राजा के कदमों पर गिर पड़ा । राजा ने ताली बजायी । उसी समय उनके अंगरक्षक वहां दौड़ते हुए पहुंचे । उन्हों ने कुंभांड को काबू कर लिया ।

"धन्यवाद, अदृश्य आत्मा! लेकिन मेरी बेटी का क्या होगा?" राजा ने प्रश्न किया ।

"इसकी चिंता मत करो । सुबह गिलास-भर तुलसी के पत्तों का रस उसे पिलाओ । फिर शाम को उसे बेल के पत्तों का रस पिलाओ । वह बिलकुल तंदुरुस्त हो जायगी । अलविदा!"

राजा और उसके साथी मंदिर की ओर बढ़े । सर्पकेतु वहीं समाधि लगाये बैठा था । राजा के आदमियों ने उसे भी झपट लिया ।

"यह क्या है? यह तुम क्या कर रहे हो?" वह अपने पूरे ज़ोर से चिल्लाया । अब उसकी नज़र कुंभांड पर पड़ी । वह उसके सामने बंधा खड़ा था । उसके हाथ जकड़े हुए थे । वह समझ गया कि उसकी तिकड़म चल नहीं पायी और वह अब सिंहासन पर बैठ नहीं पायेगा!

उसने किसी तरह की पसोपेश नहीं की । राजा के आदमियों ने उसके हाथ बांध दिये और उसे घसीटते हुए मंदिर से बाहर ले गये । (जारी)

दानी रामेश

राजा विक्रम अपने इरादे पर अडिग थे। वह उसी इरादे के साथ पेड़ की ओर बढ़े और पेड़ की एक शाखा से लटकती लाश को उन्होंने वहां से उतारकर अपने कंधे पर डाल लिया। फिर वह चुपचाप श्मशान की ओर बढ़ने लगे।

तब लाश में मौजूद बैताल बोला, "हे राजन्, आप इस समय, आधी रात को, इस भयानक श्मशान में चले जा रहे हैं। इसे देखकर तो यही लगता है कि आप कोई खास काम साधना चाहते हैं। मैं नहीं जानता कि वह काम किस के लिए साधना चाहते हैं? अपने लिए या परोपकार की भावना से किसी और के लिए? यदि यह परोपकार के लिए कर रहे हैं तो आपको सावधानी बरतनी होगी, वरना आप भी रामेश की तरह निंदा का शिकार हो जायेंगे और आपको अपनी जान का खतरा भी हो सकता है। आप को चेतावनी दे रहा हूं, और इसीलिए यह कहानी

बैताल कथाएं

सुना रहा हूं ताकि आप चेत जायें । कहानी आप ध्यान से सुनिए । इससे आपको अपना कष्ट भी महसूस नहीं होगा और आपका रास्ता भी कट जायेगा ।" फिर बैताल वह कहानी सुनाने लगा:

एक गांव था वराहगिरि । वहां विनय नाम का एक व्यापारी रहता था । वह बहुत बड़ा व्यापारी था । इतना ही नहीं, वह काफी बुद्धिमान और मेहनती भी था । ये दोनों गुण उसके बहुत काम आये । इन्हीं की बदौलत उसने इतना धन कमाया । पर इतना धन कमाने के बावजूद विनय में दानशीलता बिलकुल न थी । दान देने का उसके मन में कभी विचार ही नहीं आया था ।

विनय का एक सहायक था । उसका नाम रामेश था । रामेश नेक था और बहुत ही विश्वसनीय भी था ।

एक दिन अपने मालिक से अंतरंग बातें करते हुए रामेश ने कहा, "मालिक, एक बात आपसे कहना चाहता हूं । आप गुस्सा तो नहीं करेंगे?"

"गुस्सा और तुम पर!" विनय हंसा । फिर बोला, "गुस्सा करने वाली बात होगी तो ज़रूर करूँगा । पर पहले वह बात तो बताओ ।"

"मालिक, आप ने बहुत कुछ कमाया है ।" रामेश ने झिझकते-झिझकते कहा, "आपकी संपत्ति का उपभोग करने वाला भी कोई नहीं । तब आप किस के लिए इतना जोड़ते हैं? आप को चाहिए कि आप खूब दान-पुण्य करें । जहां धन कमाया है, वहां धर्म भी कमायें ।"

सहायक के मुंह से ऐसी बातें सुनकर विनय हक्का-बक्का रह गया । फिर किसी तरह अपनी बात को बनाये रखते हुए बोला, "रामेश, तुम्हारे पास धन नहीं है, तभी तुम इस तरह की बातें करते हो । फर्ज़ करो, मैं तुम्हें धन देता हूं । तब क्या तुम वह सारा का सारा धन, अपने पास एक कौड़ी भी न रखकर, पुण्य कार्यों पर खर्च कर दोगे?"

"क्यों नहीं, मालिक," रामेश एकाएक बोला ।

"अच्छ, तो सुनो ।" विनय ने कहा, "मैं तुम्हें एक सौ अशरफियां देता हूं । अब देखते हैं तुम उनसे कौन-सा धर्म-कार्य करते हो ।

लेकिन एक बात तुम ज़रूर याद रखना । इस सब में मेरा नाम कहीं बाहर नहीं आना चाहिए ।" और यह कहकर विनय ने रामेश को सौ अशरफियों की राशि दे दी ।

गरमियों के दिन थे । विनय से मिली राशि से रामेश ने गांव के सभी मुख्य स्थलों पर प्याऊ लगवा दिये । ये प्याऊ उस गांव में से गुज़रने वाले यात्रियों के बहुत काम आये । उन्हें इन से बहुत राहत मिली । वे रामेश को ढेर-सारी दुआएं देते हुए वहाँ से आगे बढ़ते रहते ।

विनय को जब पता चला कि रामेश ने वह राशि बड़ी ईमानदारी से खर्च की है, तो उसे बहुत संतोष हुआ ।

कुछ दिन ऐसे ही बीत गये । फिर एक दिन रामेश बोला, "हुज़ूर, मेरे पास तो अब कोई रकम बची नहीं, वरना मैं इस गांव में एक सराय बनवा देता!"

"बस, इतनी सी बात है," विनय ने हंसते हुए उत्तर दिया, "तुम सराय बनवाना शुरू करो । रक़म का बंदोबस्त हो जायेगा । लेकिन खबरदार, मेरा नाम कहीं नहीं आये ।"

रामेश को अब सराय के निर्माण के लिए आवश्यक धन मिल गया था ।

मुश्किल से तीन महीने ही बीते थे कि गांव में सराय बनकर तैयार हो गयी । अब यात्रियों को सर छिपाने की जगह सहज ही मिल गयी थी । वे दूर-दूर से आते, पर उन्हें किसी प्रकार की कोई परेशानी न होती । और

तो और, यात्रियों ने ही इसे 'रामेश की सराय' नाम दे डाला था ।

इसी तरह समय कुछ और बीत गया । रामेश फिर अकसर धर्म-कार्यों के बारे में सोचने लगा । एक दिन विनय और उसका सहायक रामेश फिर साथ-साथ बैठे अंतरंग बातें कर रहे थे कि रामेश ने कहा, "मालिक, कई लोगों के नसीब में शायद कुछ भी नहीं लिखा होता । वे मुट्ठीभर अनाज को लाचार होते हैं और भूखों मरते रहते हैं । मेरे पास धन नहीं, वरना...."

"वरना क्या करते, रामेश?" विनय ने बड़ी सादगी से मुस्कराते हुए पूछा ।

"मैं रोज़ लोगों को अन्नदान करता रहता, मालिक!" रामेश ने अपने पहले वाले जोश से

कहा ।

विनय थोड़ी देर तक कुछ सोचता रहा । फिर बोला, "जब तक मैं जिंदा हूं, तुम्हें धन की कमी नहीं आयेगी । लेकिन इतना बड़ा बोझ क्या तुम उठा सकोगे? इस बात का मुझे शक हो रहा है!"

"मालिक, धर्म-कार्य बोझ कैसे हो सकता है? आदमी का इरादा बना रहे तो ऐसा कुछ भी नहीं जो हो नहीं सकता ।" रामेश का संक्षिप्त-सा उत्तर था ।

अब रामेश लोगों को नियमित रूप से अन्नदान करने लगा था । सहायता तो विनय से ही मिलती थी । लोग दूर-दूर से आते और वहां से अन्न प्राप्त करके लौट जाते । लौटते समय वे रामेश को खूब आशिष देते । वे उसे भगवान का ही रूप समझते ।

रामेश को यह सब सुनकर बड़ा सुख मिलता ।

इसी तरह कुछ और समय निकल गया ।

एक रात अचानक विनय का देहांत हो गया । उसका कोई वारिस तो था नहीं, इसलिए संपत्ति सरकारी खज़ाने में चली गयी । अब रामेश को धन मिलना बंद हो गया था । इसलिए उसे अन्नदान करना भी बंद करना पड़ा ।

इधर जैसे ही उसने अन्नदान करना बंद किया, वैसे ही लोगों में बेचैनी फैल गयी । उसने लोगों को काफी समझाने की कोशिश की कि अन्नदान न कर पाना उसकी मजबूरी है, पर कोई उस पर विश्वास करने को तैयार न था । लोगों को लगा कि वह एकदम कंजूसी पर उतर आया है । इसलिए उसे गाली तो दी ही, उस पर पत्थर भी बरसाये । पत्थरों का बरसना था कि रामेश के प्राण छूट गये ।

बैताल ने अपनी कहानी पूरी कर ली थी । कहानी पूरी कर चुका तो बोला, "राजन्, रामेश की इस मृत्यु का कारण कौन है? विनय या वे भूखे लोग? मुझे इसका सही उत्तर चाहिए । सही उत्तर न मिलने पर आपका सर फट जायेगा ।"

राजा विक्रम को मजबूर होकर कहना ही पड़ा, "विनय को तो हम किसी तरह भी दोषी नहीं ठहरा सकते । रामेश ने उससे धन मांगा, और उसने उसे दिया । उसने तो

किसी प्रकार के यश की भी कामना नहीं की । वह तो एकदम नि:स्वार्थी था । उसने रामेश से स्पष्ट शब्दों में कहा था कि उसका दान देने में कहीं नाम नहीं आना चाहिए । अब लोग तो यही जानते थे कि दान देने वाला रामेश है । रामेश का चारों तरफ यशोगान हो रहा था । फिर भी विनय को किसी प्रकार की कोई ईर्ष्या नहीं हुई । उधर रामेश को भी अपने मालिक से जो धन मिला, उसका उसने पूरी तरह सदुपयोग किया । लेकिन उसने एक गलती की । उसने यह नहीं सोचा कि मुफ्त अन्नदान उसी को किया जाता है जो पूरी तरह अक्षम हो । यानी विकलांगों, वृद्धों इत्यादि को अन्नदान करना ठीक है, पर जो खुद कमा सकते हैं, उन्हें यह देना कहां तक उचित है? दरअसल, मुफ्त में सब को अन्नदान करने का अर्थ तो यह होगा कि निकम्मों को और निकम्मा बनाया जाये । हां, विनय से धन लेकर यदि रामेश ने उन निकम्मों के लिए कोई काम का साधन तैयार कर दिया होता तो वह और बात थी । उन्हें काम सिखाकर अपने पैरों पर खड़ा किया होता तो नतीजा दूसरा होता । दूसरे, लगातार अन्नदान करते रहना बड़े से बड़े धनी के लिए भी संभव नहीं, चाहे वह स्वयं महाराजाधिराज ही क्यों न हो । पर यहां तो बात ही दूसरी थी । रामेश स्वयं अपनी मदद तो कर नहीं सकता था, चला था दूसरों की मदद करने । इसमें उस की ज़रा भी बुद्धिमानी नहीं थी । फिर उसने भूखे-आलसियों की इतनी आंकाक्षा बढ़ायी कि उन्होंने, उन्हें मुफ्त का अन्न न मिलने पर, उसकी जान ही ले ली । इसलिए सारा दोष रामेश का अपना ही है, और किसी का नहीं ।"

उत्तर देने से राजा विक्रम का मौन भंग हो चुका था । इसलिए बैताल फौरन वहां से लाश के साथ ग़ायब हो गया, और उसी पेड़ की शाखा से जा लटका जिस पर वह पहले लटक रहा था ।

(कल्पित)

(आधार: डॉ. टी.जी.आर. प्रसाद की रचना)

सोने की पहचान

हीरालाल सूद पर पैसे देने का काम करता था । वह रामपुर नाम के गांव में रहता था । हीरालाल से रामपुर गांव के लोग ही सूद पर पैसा नहीं लेते थे, बल्कि आस-पास के गांव के लोग भी आते । वह लोगों की चीज़ें गिरवी रखता था और उनकी कीमत के अनुरूप उन्हें कर्ज़ दे देता ।

हीरालाल के पास कर्ज़ लेने आनेवालों में वीरभद्र भी था । वह एक मामूली किसान था । वह ज़रूरत पड़ने पर अक्सर उसके पास आता और अपने हाथ का सोने का कड़ा गिरवी रखकर कर्ज़ की राशि ले जाता । फिर जब उसके हाथ पैसे लगते तो वह सूद-समेत अपना कर्ज़ चुकता कर देता और अपना कड़ा वापस ले जाता ।

एक बार जब वीरभद्र हीरालाल के यहां कर्ज़ लेने गया तो वहां रामशरण नाम का एक सुनार भी बैठा था । वीरभद्र ने पचास अशरफियों की हीरालाल को अपनी ज़रूरत बतायी और कड़ा गिरवी रखकर वह राशि ले गया ।

वीरभद्र चला गया तो रामशरण उसके कड़े को ग़ौर से देखता रहा । उसे हैरानी हो रही थी कि हीरालाल ने उस कड़े के एवज़ में इतनी बड़ी राशि कैसे दे डाली! उसकी कीमत तो दस अशरफियों से किसी हालत में ज़्यादा नहीं होगी!

रामशरण सोचता रहा । उसने हीरालाल से कुछ नहीं कहा । उसे विश्वास हो गया था कि हीरालाल को सोने की पहचान नहीं है । उसने वहां अपना काम खत्म किया और चुपचाप वहां से चला आया ।

रामशरण कारीगर तो बढ़िया था । उसने काफी देर सोचकर आख़िर एक निर्णय लिया और उस के अनुसार काम में वह लग गया । उसने कुछ सोना लेकर, उस सोने में काफी

रमेश द्विवेदी

खोट मिलाया और उससे बड़े खूबसूरत तीन-चार ज़ेवर तैयार किये ।

फिर वह उन ज़ेवरों के साथ हीरालाल के यहां जा पहुंचा और बोला, "हीरालाल जी, मेरी छोटी बेटी की शादी तय हो गयी है । खर्चा ढेर सारा आ पड़ा है । मैं अपनी किराये की दुकान से भी छुटकारा पाना चाहता हूँ । मैं चाहता हूं मेरी अपनी दुकान हो । आप मेहरबानी करके मेरे लिए एक हज़ार अशरफियों की व्यवस्था कर दें । मैं ये ज़ेवर गिरवी रखने के लिए लाया हूँ । आप इन्हें रख लें और मेरी ज़रूरत पूरी कर दें ।"

हीरालाल ने रामशरण के हाथ से वे ज़ेवर ले लिये और उनकी ठीक से जांच की । फिर उसने अपने होठ बिचकाये और बोला, "रामशरण, तुम्हारे पास ये ज़ेवर देखकर मुझे ताज्जुब हो रहा है! यह तो मैं मान नहीं सकता कि तुम्हें खरे और खोट में पहचान नहीं है!"

रामशरण ने मासूमियत का ढोंग किया, "आप कहना क्या चाहते हैं?"

हीरालाल अब हंसने से अपने को रोक न सका । बोला, "ये सभी ज़ेवर खोटे सोने के हैं । क्या इन से तुम अपनी छोटी बेटी की शादी करोगे? तब तो आये दिन झगड़े ही होंगे । अब बताओ, तुम्हें पैसे चाहिए ही? मैं तुम्हें इन पर केवल पांच सौ अशरफियां दे सकता हूं ।"

रामशरण का चेहरा सूख गया था । उसका हलक भी बुरी तरह सूख रहा था । किसी तरह कोशिश करके रामशरण बोला, "हम मुद्दत से आपस में लेन-देन कर रहे हैं । साथ-साथ रहते आये हैं । आप यह कैसी बात कर रहे हैं! आप समझते हैं कि मैं आप को धोखा देना चाह रहा था? खैर, छोड़िए इस बात को । धोखा तो आप बराबर खाते ही रहते हैं । उस दिन आपने बिना किसी हीलो-हुज्जत के वीरभद्र का खोटा कड़ा रखकर उसे पचास अशरफियां दे डालीं । अब जब मैं कर्ज़ मांग रहा हूं तो आप खोटे-खरे में भेद कर रहे हैं!"

हीरालाल रामशरण की बात सुनकर पहले तो चुप रहा । फिर बोला,

''रामशरण, दरअसल बहुत होशियार हो तुम । मैं तुम्हारी होशियारी पहले ही ताड़ गया था ।उस दिन जब तुमने वीरभद्र के कड़े को अपने हाथ में काफी देर तक घुमाया था तो मैं तुम्हें समझ गया था ।''

अब चुप रहने की रामशरण की बारी थी । हीरालाल उसकी इस चुप्पी पर मज़े-मज़े हंस दिया और बोला, ''यह मत समझो कि मैं वीरभद्र के कड़े के खोट के बारे में नहीं जानता था!''

''फिर आपने सब कुछ जानते-बूझते हुए वह रकम उसे कैसे दे दी? इसकी कीमत तो, दरअसल, दस अशरफियां भी नहीं ।'' रामशरण ने प्रश्न किया ।

''ठीक है,'' हीरालाल ने कहा, ''कड़े की कीमत दस अशरफियां भी नहीं, पर वीरभद्र तो लाखों का आदमी है । मैंने विश्वास वीरभद्र पर किया । मैं उसे बचपन से जानता हूं । उसकी ईमानदारी का कोई जवाब नहीं । उसकी ज़रूरत पचास अशरफियों की ही थी, पर वह बिना कोई चीज़ गिरवी रखे कर्ज़ न लेता । इसीलिए मैंने उसका कड़ा गिरवी रखा ।''

अब रामशरण को असलियत पता चल गयी थी । बोला, ''आप कहते हैं वीरभद्र को आप बचपन से जानते हैं । तब आप उसे बता क्यों नहीं देते कि यह कड़ा असली नहीं, खोट वाले सोने का है!''

''तुम वीरभद्र को नहीं जानते । वह बिलकुल दूसरी तरह का इंसान है । अगर उसे यह पता चल जाये कि यह कड़ा पचास अशरफियों की कीमत का नहीं, तो वह मेरे पास कभी कर्ज़ लेने नहीं आयेगा । किसी धोखेबाज़ ने उससे एक सौ अशरफियां लेकर उसे यह चपत लगा दी थी ।'' हीरालाल ने उसे समझाया ।

हीरालाल का उत्तर सुनकर रामशरण पानी-पानी हो गया । उसे अपने किये पर शर्म आयी । उसका सर खुद-ब-खुद झुक गया था । उसने अपने ज़ेवर उठाये और वहां से भाग लिया ।

उनके सपनों का भारत

"जागो! उठो!"

आज जो 'नेताजी' के नाम से विख्यात हैं, उनका असली नाम सुभाषचंद्र बोस था। उनका जन्म जुलाई १८९७ में हुआ था।

नेताजी ने १९२० में लंदन में आई.सी.एस. की परीक्षा पास की, पर उन्होंने सरकारी नौकरी अपनाने के बजाय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल होना पसंद किया। राष्ट्रीयता उन में कूट-कूटकर भरी हुई थी। इसलिए ब्रिटिश सरकार ने उन्हें गृहबंदी बना दिया। लेकिन १९४१ में वह भागकर काबुल पहुंच गये और वहां से होते हुए जर्मनी जा पहुंचे। मलाया प्रायद्वीप में उन्होंने आज़ाद हिंद फौज का गठन किया और अपनी आवाज़ को देश के एक-एक युवक तक पहुंचाया।

"मैं तुम सब का देश की सेवा जैसे पुण्य कार्य के लिए आह्वान करने की आज्ञा चाहता हूं। आओ, एक-एक करके सब आगे आओ, तुम जहां कहीं भी हो। सुनो! क्या तुम मां की पुकार नहीं सुन रहे? क्या तुम बराबर निद्रावस्था में ही पड़े सोते रहोगे? जागो, उठो! वक्त कीमती है। इसे अब बरबाद मत करो। अठारहवीं शताब्दी में विदेशी व्यापारियों को देश में घुसने की इजाज़त देकर तुम्हारे पुरखों ने जो पाप किया था, तुम इस शताब्दी में उसका प्रायश्चित्त करो। भारत की आत्मा जाग गयी है। वह मुक्ति के लिए गुहार कर रही है। हमें अब केवल एक ही बंधन से बंधना है, और वह है आपसी भाई-चारे का बंधन। हमें शपथ लेनी है कि हम भारत की स्वतंत्रता वापस लेंगे और उसका पुराना वैभव और गौरव उसे लौटायेंगे।"

क्या तुम जानते हो?

१. किस देश ने मीटरिक प्रणाली सब से पहले अपनायी?

२. सिकंदर-ए-आज़म को, जब वह अभी नन्हा बालक ही था, घोड़ा भेंट किया गया था। उस घोड़े का नाम क्या था?

३. आत्म-रक्षा की विधि, जिसे जूडो कहते हैं, किसने और कब शुरू की?

४. क्या तुम ने ऐसी रोमन दावत के बारे में सुना है जहां दासों ने नहीं, स्वामियोंने दासों को भोज खिलाया। वह कैसी दावत थी?

५. स्वास्थ्य टिकटें कौन-सा देश जारी करता है? वे क्या होती हैं?

श्रीरामचंद्र

राम की कथा प्रायः घर-घर में जानी जाती है। राम विष्णु के अवतार थे। उन्होंने अयोध्या के युवराज के रूप में जन्म लिया। उनके वैभवपूर्ण जीवन के बारे में जानकारी हमें आदिकवि, वाल्मीकि के अमर महाकाव्य में मिलती है।

राम विष्णु के सातवें अवतार थे। उनका जीवन आदर्श था जिसने भारतवासियों की पीढ़ियों के बाद पीढ़ियों को प्रेरित किया। उन्होंने दर्शाया कि ऋषियों को कैसे सम्मान दिया जाता है। अभी वह युवावस्था में पहुंच ही रहे थे कि वह उनकी रक्षा केलिए राक्षसों से लड़ने चल पड़े। उन्होंने यह भी दर्शाया कि पुत्र का पिता के प्रति कैसा बरताव होना चाहिए। अपने पिता को अपनी बात से झूठा न पड़ने देने के लिए वह जंगल की ओर प्रस्थान कर गये। उन्होंने यह भी दर्शाया कि भाई-भाई के बीच, पति-पत्नी के बीच तथा राजा और प्रजा के बीच आदर्श रिश्ता कैसे निभाया किया

जाता है ।

वानरों को लेकर ही उन्होंने लंका के बलशाली राक्षस राजा रावण पर चढ़ाई कर दी । इससे यही स्पष्ट होता है कि जब दैवी शक्ति स्वयं पथ-प्रदर्शन कर रही हो तो वानरों जैसे आधे-अधूरे जीव भी धूर्त्त राक्षसों की टक्कर ले सकते हैं ।

राम आज समूचे भारत में पूजे जाते हैं । लेकिन उनके साथ उनकी सहधर्मिणी सीता, अपनी जान न्योछावर करने वाला उनका छोटा भाई लक्ष्मण और उनका अनन्य भक्त हनुमान भी रहते हैं ।

चंदामामा की खबरें

झुकाव में और तेज़ी

क्या पीसा की विश्वविख्यात मीनार ने ज़्यादा तेज़ी से झुकना शुरू कर दिया है?

कम-से-कम वे दो विद्वान जो इसके आधार और लंब पर आंख रखे हैं और उन्हें बराबर मापते रहते हैं, यही कहेंगे । १९१८ से मापने का यह काम जारी है । तब से अब तक औसतन सालाना झुकाव १.१९ मि.मी. रहा है । लेकिन १९९१ के पहले तीन महीनों में यह मीनार १.१ मि.मी. झुका । अब तक यह मीनार ५ मीटर, यानी १२ फुट से अधिक, झुक चुका है ।

जन्मदिन की भेंट

डॉ. एस. चंद्रशेखर का नाम प्रायः हर कोई जानता है । तरल बिल्लौर (लिक्विड क्रिस्टल्स) पर वह संसार के सब से बड़े विद्वान माने जाते हैं ।

हाल ही में उनके सम्मान में विश्वविख्यात मैसाचुसैटस इंस्टीट्यूट और टैक्नॉलोजी के तत्वावधान में एक अंतर्राष्ट्रीय विचार-गोष्ठी का आयोजन किया गया । विचार-गोष्ठी में सौ से अधिक संसार के अग्रणी वैज्ञानिकों ने भाग लिया । डॉ. चंद्रशेखर ने जून के महीने में ६० वर्ष पूरे किये । इंस्टीट्यूट की ओर से उन्हें यही जन्मदिवस भेंट दी गयी । तरल बिल्लौर की बदौलत ही आज अंक घड़ी हर सैकंड का हिसाब रखते हुए आगे बढ़ती है ।

आओ, साहित्य की दुनिया में विचरण करें

१. किस अंग्रेज़ी पुस्तक में हमें ऐसे घोड़ों का नाम मिलता है जिन्हें 'हूइनहन्मस' कहते हैं?

२. जापान के सब से पुराने ग्रंथ का नाम क्या है?

३. एक वायुयान चालक लेखक बन गया। उसने उड्डयन पर एक पुस्तक लिखी जो बेजोड़ मानी जाने लगी। उस लेखक तथा उसकी पुस्तक का नाम बताओ।

४. अंगरेज़ी के दो जाने-माने कवि एक ही वर्ष में पैदा हुए। वे कौन थे? किस वर्ष में वे पैदा हुए?

५. टैगोर की 'गीतांजलि' का प्रकाशन इंगलैंड में १९१३ में हुआ। उसकी भूमिका किसने लिखी?

उत्तर

क्या तुम जानते हो?

१. फ्रांस।

२. बयूसेफेलस।

३. डॉ. जिगोरो कानो, १८८२ में।

४. दै सैटर्नेलिया।

५. न्यूज़ीलैंड। उनकी वास्तविक कीमत अंकित कीमत से अधिक होती है। जो अतिरिक्त राशि प्राप्त होती है, उसे ग़रीबों तथा बीमार बच्चों के इलाज के लिए स्वयंसेवी संस्थाओं को दे दिया जाता है।

साहित्य

१. 'गलिवर्स ट्रैवल्स' में। इन घोड़ों को अच्छाई-बुराई का विवेक, तर्क-बुद्धि तथा इंसान के दूसरे गुण भी प्राप्त थे।

२. 'कोजिकिक'। इस में पुरातन काल से ६०० ई. तक के जापान के इतिहास का वर्णन है।

३. एंटोयने सेंट एक्ज़ूपरी। उन्होंने विंड, 'सैंड अंड स्टार्स,' नामक पुस्तक की रचना की।

४. लार्ड टैनिसन तथा एडगार एलन पो; १८०९ में।

५. डब्ल्यू.बी. यीट्स।

संसार की पौराणिक कथाएं – ७

दो वृक्ष

एक सुंदर घाटी में एक साधारण-सा गांव था । अब जहां वह गांव था, किसी ज़माने में वहां एक तालाब था । जैसे ही वह तालाब सूखा, वैसे ही वहां पर गांव बस गया । प्रकृति गांववालों पर खुश थी । इसलिए वहां अच्छी फसल होती थी ।

उस गांव के एक छोर पर फिलेमन नाम का एक बूढ़ा और बॉगी नाम की उसकी पत्नी रहते थे । वे ग़रीब थे, पर बहुत मेहनती थे और मेहनत से ही अपनी अंगूर की फसल पैदा करते थे । जो कुछ वे कमाते, उसमें मुश्किल से दो जून का खाना ही नसीब हो पाता । पर इससे वे कभी परेशान नहीं हुए ।

एक शाम उस दंपति ने सुना कि कुत्ते भौंक रहे हैं । बच्चे भी चिल्ला रहे थे । वे समझ गये कि हमेशा की तरह वे गांववाले किसी अजनबी मुसाफिर को सता रहे होंगे । स्वभाव से क्रूर तो वे थे ही । वे अजनबियों पर कुत्तों को छोड़ देते थे और बच्चों को उनके पीछे लगा देते थे ।

वह दंपति अपनी झोंपड़ी से बाहर आया । उसने देखा कि दो यात्री हैं जिन्हें गांववाले सता रहे हैं । वह आगे बढ़ा और उनका सत्कार करते हुए उन्हें अपनी झोंपड़ी में ले गया । यात्री उस दंपति से बोले, "इस गांव के लोग अपने बच्चों को इस तरह क्यों बिगाड़ रहे हैं? यही कारण है कि इस घाटी में कोई नहीं आना चाहता ।"

दंपति ने बड़े प्यार से उन्हें आधी रोटी खाने को दी । उस समय रोटी उतनी ही बची थी । थोड़ा दूध भी था जो एक बर्तन में था । बॉसी ने वह दूध बराबर बराबर दो प्यालों में डाल दिया । यात्रियों ने दूध पिया और बोले, "दूध बड़ा ज़ायकेदार है! क्या थोड़ा और मिलेगा?"

यात्रियों का प्रश्न सुनकर बॉसी सकुचा गयी । बर्तन में उतना ही दूध था । बोली, "क्षमा कीजिए । अब तो एक बूंद भी दूध नहीं है ।" इस पर यात्री हंस पड़े । फिर उनमें से एक बोला, "यदि आधा बूंद भी हो तो चलेगा!" बॉसी ने झिझकते-झिझकते उस बर्तन को उंड़ेला । ताज्जुब! वे तो दोनों ही प्याले भर गये ।

"अब आप लोग भी दूध पिएं । बर्तन में अभी और भी है ।" यात्रियों ने उस दंपति से कहा । दंपति ने दूध चखा । ग़ज़ब का स्वाद था । फिर उस आधी रोटी के टुकड़े किये गये । पर जितनी बार टुकड़े किये जाते, रोटी आधी की आधी ही बनी रहती ।

उस रात वे दोनों यात्री उसी झोंपड़ी में सोये । गहरी नींद आयी उन्हें । सुबह होते ही वे चलने को तैयार हो गये । दंपति उन्हें विदाई देने उनके साथ ही कुछ दूर तक आगे बढ़ा ।

जब वे गांव से कुछ ही दूर आये तो उन चारों ने पीछे मुड़कर देखा । गांव का वहां नामोनिशान तक न था, बल्कि उसकी जगह एक पहाड़ी झरना बह रहा था । बूढ़े पति-पत्नी हैरान रह गये । अब वे अजनबी बोले, "इस में हैरान होने की कोई बात नहीं । ये दुष्ट इस घाटी में रहने के काबिल नहीं थे । इसीलिए यह गांव झरने में बदल गया है और यहां के लोग मछलियां बन गये हैं ।"

"अब तुम एक बार फिर पीछे मुड़कर देखो," राहगीरों ने दंपति से कहा। बूढ़े पति-पत्नी ने वैसा ही किया। जहां उनकी झोंपड़ी थी, वहां एक शानदार इमारत खड़ी थी। इस पर वे राहगीर बोले, "तुम दोनों अजनबी यात्रियों की सेवा करते थे। इसलिए तुम्हें एक बड़ा भवन चाहिए था। है न!" दंपति ने उन्हें झुककर नमस्कार किया। पर इतने में वे ग़ायब हो चुके थे।

उसी दिन से उनका वह बर्तन बराबर दूध से भरा रहने लगा जिसे वे आने-जाने वाले यात्रियों को बड़े प्यार से पिलाते। उनके बग़ीचे में अब अंगूर भी खूब होते थे। उन्हें भी वे अपने अतिथियों में बांट देते।

उस झरने के चारों ओर अब एक नया गांव बसने लगा था। बूढ़े दंपति की खूब प्रतिष्ठा थी। पहले गांव के लोग तो अब तालाब की मछलियां बन चुके थे, पर उन मछलियों को कोई खाता नहीं था। एक दिन बूढ़ा फिलेमन और उसकी पत्नी बॉसी एकाएक ग़ायब हो गये। उनकी जगह वहां दो पेड़ खड़े दिखाई दिये। बड़े ही छायादार पेड़ थे वे। वे तब से ही आने-जाने वालों को छाया दे रहे हैं।

दया

सीतापुर में श्रीपति नाम का एक व्यक्ति रहता था। वह देखते-ही-देखते करोड़पति हो गया। उसके मन में यह घमंड समा गया कि उसके बराबर और कोई धनवान् नहीं है।

एक दिन श्रीपति के घर में एक मेहमान आया। उसका नाम नारायण था। वह श्रीपति की तरह अमीर तो नहीं था, पर हर कोई उससे मिलने के इच्छुक था।

यह सब देखते हुए श्रीपति के मन में ईर्ष्या जागी। उसने नारायण से एकांत में पूछा, "आखिर, बात क्या है? लोग तुम से मिलने के लिए इतने उतावले क्यों हो रहे हैं?"

नारायण को यह प्रश्न सुनकर हंसी आ गयी। बोला, "देखो, दुनिया में सब से आसान काम है पैसा कमाना। पैसा कमाने के लिए व्यक्ति को स्वार्थी होना पड़ता है। स्वार्थी लोगों को आत्मतुष्टि तो मिलती है, पर गौरव नहीं मिल पाता। व्यक्ति का सर्वोपरि गुण दया है। जब कोई व्यक्ति तकलीफों से घिरा होता है, तब दयावान उसे अपनी दया के बल पर उबारता है। अपनी दया के कारण मैंने अपना धन खो दिया है, पर उसके बदले में जो स्नेह मिला उसका कोई मुकाबला नहीं। मैं लोगों के मन में परिवर्त्तन लाना चाहता हूं। इसी उद्देश्य से मैं अब देश के कोने-कोने में घूम रहा हूं। इस गांव में भी इसी उद्देश्य से आया हूं।"

नारायण उस गांव में दस दिन तक रहा। वह अपना संदेश घर-घर पहुंचाना चाहता था। उसने सभाएं भी कीं। व्यक्तिगत रूप से भी लोगों से मिला। और जब उसे लगा कि उसका काम पूरा हो चुका है, तो वह अगले गांव के लिए रवाना हो गया।

अब श्रीपति के मन में भी आया कि वह भी नारायण की तरह अपने दयावान् होने का

कमला श्रीवास्तव

घर-घर प्रचार करे और खूब नाम कमाये । उसे एक योजना सूझी । गांव में सिबू नाम का गरीब व्यक्ति था । वह चोरी करता था । श्रीपति ने उसे बुलवाया और उससे बोला, "सिबू, मैं तुम्हारी मदद करना चाहता हूं । मैं जानता हूं तुम्हारे चोरी करने की वजह से तुम्हें कोई काम नहीं देता । अब इस समस्या का समाधान भी मैंने ढूंढ़ निकाला है । जो मैं कहूं, उसे चुपचाप करो ।" और श्रीपति ने उसे सारी बात समझा दी ।

योजना के मुताबिक सिबू श्रीपति के घर चोरी करने आया । जिस कमरे में तिजोरी रखी थी, उस कमरे की चाभियां श्रीपति ने ही सिबू को दीं । उस कमरे के सामने भीमसिंह पहरा देता था । उस पहरेदार की आंख बचाकर कमरे का ताला खोलना कोई आसान काम नहीं था । इधर सिबू पकड़ा जायेगा, उधर श्रीपति उस पर दया कर उसे छोड़ देगा । उसे अपने यहां नौकरी पर रख लेगा और चारों ओर यह बात फैलायेगा कि हालात का मारा हुआ सिबू चोरी करने पर मजबूर था । पर यह नौकरी मिल जाने से उसमें आशा की ज्योति जगमगा उठेगी और वह मेहनत-मशक्कत से कमाई करने लगेगा ।

श्रीपति की बात सिबू मान गया । देर रात वह श्रीपति के घर चोरी करने के लिए घुसा । जिस कमरे में तिजारी थी, उस कमरे पर एक बड़ा-सा ताला पड़ा हुआ था । थोड़ी दूरी पर भीमसिंह पहरेदार खर्राटे लेते हुए सो रहा था । सिबू ने जान-बूझकर खूब आवाज़ करके ताला खोला । उस आवाज़ से भीमसिंह की नींद खुल गयी । उसने जब देखा कि तिजोरी वाले कमरे का ताला खुल चुका है, तो उसे बड़ा ताज्जुब हुआ । यह कैसे संभव है? घर के चारों ओर तो कड़ा पहरा है! पहरे की उस अभेद्य दीवार को कैसे किसी ने तोड़ा होगा और फिर कैसे वह यहां, इस कमरे तक पहुंचा होगा, और चाभियों से ताला खोला होगा! ताज्जुब! वाकई ताज्जुब है! ये चाभियां उसके हाथ लगीं कैसे? भीमसिंह को भी एक तरकीब सूझी । वह बिलकुल चुपचाप पड़ा देखता रहा कि देखें अब चोर करता क्या है!

सिबू ने अब तिजोरी को चाभी लगायी और उसे खोल लिया । तिजोरी में गहने ही गहने थे । उसमें हीरे-जवाहरात भी जड़े हुए थे ।

सोने-चांदी के सिक्के भी थे । सिबू ने इतनी दौलत पहले कभी नहीं देखी थी। वह चौंधिया गया । उसके साथ-साथ भीमसिंह भी चौंधिया गया । उसने भी इतनी दौलत पहले कभी नहीं देखी थी ।

अब भीमसिंह ने अपना दूसरा दावँ चला । उसने फौरन सिबू को अपनी गिरफ्त में ले लिया और उससे बोला, "इस घर में घुसकर इस तरह चोरी करनेवाला चोर कोई साधारण चोर नहीं हो सकता । मैं तुम्हें छोड़ सकता हूं ताकि तुम भाग जाओ । पर एक शर्त पर । इसमें से आधी दौलत तुम्हें मुझे देनी होगी । मैं बेहोशी की दवा सूंघकर पड़ा रहूंगा । जब मुझ से पूछताछ की जायेगी तो मैं बता दूंगा कि मुझे बेहोशी की दवा सुंघा दी गयी थी ।"

सिबू ने यह सब तो कभी सोचा भी नहीं था । भीमसिंह की बात सुन वह चौंक गया । श्रीपति की मदद से ही वह इस घर में घुस पाया था और उसी की मदद से वह इस घर से बाहर जा सकता था । भीमसिंह इस तथ्य से वाकिफ़ नहीं था । तभी वह अपने मन की बात यों ही कह गया ।

सिबू सच्चाई कहने से अपने को रोक नहीं सका । बोला, "मौका आने पर ही लोगों को परखा जा सकता है । हां, जो मौका मिलने पर भी चोरी न करे, सही व्यक्ति वही है । अब तुम्हारी बात अगर मालिक को पता चल गयी तो वह फौरन तुम्हें नौकरी से अलग कर देगा । ऐसी बात तुम्हारे मन में कतई नहीं आनी चाहिए थी। खैर, अब तुम तो सीधे-सीधे मुझे अपने मालिक के हवाले कर दो और अपना नाम कमाओ ।"

सिबू की बात सुनकर भीमसिंह उसके पांव पड़ गया और बोला, "तुम ने सच्चाई कहकर मेरी आंखें खोल दी हैं । तुम ने मेरी नौकरी बचायी है । मैं वक्त आने पर तुम्हारी हर तरह से मदद करूंगा ।" और यह कहकर वह उसे श्रीपति के पास ले गया ।

भीमसिंह की बात श्रीपति ने ग़ौर से सुनी । फिर उसे बाहर रहने को कह सिबू को भीतर एक कमरे में ले गया और कमरे के दरवाज़े बंद करके बोला, "सिबू, यह मत समझो कि तिजोरी को तुम्हारे हवाले करके मैं मज़े से सो गया था । मैं बराबर तुम पर आंख रखे हुए था । भीमसिंह का असली रूप अब एकदम

सामने आ गया है । वह एक बेईमान आदमी है । ऐसे आदमी का पहरे पर रहना ठीक नहीं । मुझ से पहले ग़लती हुई, अब नहीं होगी । चोर तुम थे । इसलिए मैं उसे नौकरी से हटाकर उसकी जगह तुम्हें रख रहा हूं । पर तुमने भीमसिंह के बारे में अपने मुंह से मुझे कुछ नहीं बताया । इसका कारण मुझे बताओगे? नौकरी तो तुम्हें मिलेगी ही ।''

तब सिबू श्रीपति से बोला, ''मालिक, एक बार किसी पर यदि चोर की छाप पड़ जाये तो वह कहीं का नहीं रहता, नौकरी मिलना तो दूर की बात है । ऐसे आदमी की हालत क्या होगी, यह मैं ही जानता हूं । मैं तो जाना हुआ चोर हूं । फिर भी आप नौकरी मुझे दे रहे हैं, पर भीमसिंह के मन में केवल चोरी का विचार आने पर ही आप उसे नौकरी से हटा रहे हैं । यह बात मेरी समझ में नहीं आयी । आप दयावान् होना चाहते हैं । आप भीमसिंह को क्षमा कर दें ।''

श्रीपति सिबू की बात सुनकर थोड़ा असमंजस में पड़ गया । फिर उसने सिबू से पूछा, ''तुम ठीक कहते हो, पर तुमने भीमसिंह के मन में आये खोट के बारे में मुझे कुछ नहीं बताया, क्या यह तुम्हारी ग़लती नहीं?''

सिबू की बात सुनकर श्रीपति हैरान रह गया । उसने तो जो दया दिखानी चाही थी, यश कमाने की आकांक्षा तले दबकर दिखानी चाही थी । नारायण उसके यहां दस दिन तक रहा । उसने उससे भी कुछ न सीखा । और इधर यह सिबू है जिसके भीतर चोर होते हुए सही मानों में दया उपजी । श्रीपति अपने पर बहुत लज्जित हुआ । जब तक सिबू ने उसे नहीं चेताया, उसके मन में भीमसिंह को क्षमा करने की बात आयी ही नहीं ।

खैर, एक बात तो ज़ाहिर हुई । दया भाव दिखाने के विचार से ही श्रीपति को भीमसिंह के खोट के बारे में पता चला और उससे वह आने वाले खतरे से बचा । साथ ही उस में एक ज़बरदस्त परिवर्त्तन भी आया । वह भी सही मानों में दयावान बन गया और उसने काफी नाम कमाया ।

हनुमान ने सीता से कहा, "माता, मैं राम का दूत हूं। मैं आपको ढूंढ़ते-ढूंढ़ते यहां आया हूं। राम और लक्ष्मण कुशलतापूर्वक हैं। लक्ष्मण ने आपको प्रणाम भेजा है।"

राम-लक्ष्मण का नाम सुनते ही सीता का शरीर आनंद से पुलक उठा। हनुमान धीरे-धीरे सीता की ओर सरक रहा था। यह देखकर सीता एकदम सशंकित हो उठी। उसे लगा कि हो सकता है रावण ही वानर के रूप में यहां आ टपका है। इस विचार के उसके मन में आते ही वह डर गयी। उसने पेड़ की जिस डाली को पकड़ रखा था, उसे एकाएक छोड़ दिया और वहीं धम से बैठ गयी।

हनुमान ताड़ गया कि सीता उसके प्रति आशंकित है। इसलिए उसने उसे आश्वस्त करने के लिए उसे नमन किया। पर सीता ने उसकी अवहेलना की। केवल उसने ठंड़ी आह भरी और बोली, "अगर तुम रावण हो तो इस तरह मायामर्कट के रूप में आकर मुझे ठगना तुम्हें शोभा नहीं देता। अरण्य में भी तुमने इसी प्रकार रूप बदलकर मुझे ठगा। तब तुम ने साधु-वेश धारण किया था। अगर तुम सचमुच राम के दूत हो तो राम के किन्हीं गुणों का बखान करो।"

हनुमान के बारे में सीता को संदेह तो था ही, उसे यह भी लगा कि वह जैसे कि कोई स्वप्न देख रही हो और कहीं और विचरण कर रही थी। इन्हीं सब बातों से वह काफी क्षुब्ध हो उठी।

अपनी पहचान पक्की करने के लिए हनुमान ने अब सीता को राम की अंगूठी

१४. अशोक वाटिका का विध्वंस

लौटना है । वह मेरी प्रतीक्षा में होंगे । आदेश दें कि राम तक कोई संदेश ले जाऊं!"

"राम से कहो कि रावण ने मुझे जो एक वर्ष की अवधि दी थी, वह अब समाप्त होने को है । इसलिए उन्हें इसके पहले ही यहां पहुंचना होगा । रावण के छोटे भाई विभीषण ने उसे सलाह दी थी कि मुझे राम को लौटा दिया जाये, लेकिन रावण ने विभीषण की सलाह पर कान नहीं धरा । यह बात मुझे नला ने बतायी थी । नला विभीषण की बेटी है । वह अपनी मां के कहने पर मुझ से मिलने आयी थी । लेकिन जब तुम समुद्र फलांग कर यहां लंका में आये हो और फिर राक्षसों की नज़र बचाकर यहां बेरोक-टोक घूम रहे हो तो तुम्हें तगड़ी सूझबूझ वाले और बलशाली ही कहना होगा ।" सीता बोली ।

दी और राम के रूप-गुण का वर्णन किया । फिर उसने सीता को बताया कि वह लंका में कैसे दाखिल हुआ और कैसे वह यहां तक पहुंचा । इस पर सीता के मन को शांति मिली । अब हनुमान ने राम और लक्ष्मण के रूप का ऐसा वर्णन किया कि वे हू-ब-हू उसके सामने सजीव हो उठे । इसके बाद राम के साथ सुग्रीव की मित्रता और दूसरे प्रसंगों को भी उसने कह सुनाया । उसने उसे यह भी बताया कि उसे ढूंढ़ते-ढूंढ़ते उसने सारी लंका को कैसे छान मारा । यह सारा वृत्तांत सुनकर सीता की आंखों से आनंद के आंसू बहने लगे । अब वह हनुमान के प्रति पूरी तरह आश्वस्त थी ।

फिर हनुमान ने कहा, "अब मेरे लिए क्या आदेश है? मुझे यथाशीघ्र राम के पास भी

हनुमान का उत्तर इस प्रकार था: "मैं जैसे ही राम के पास लौटूंगा, उन्हें सब कुछ सविस्तार बता दूंगा । वह वानरों और भालुओं की सेना के साथ यहां आयेंगे । यदि यह आप को विश्वसनीय नहीं लगता तो आप मेरी पीठ पर आसन ग्रहण करें, मैं आपको सागर पार करा राम तक पहुंचा दूंगा । वैसे यदि मैं चाहूं तो रावण समेत समूची लंका को ही उठाकर ले जा सकता हूं । आप आदेश दें । इससे राम के बहुत शीघ्र आपको दर्शन होंगे ।"

"तुम हो तो छोटे-से वानर, और बातें करते हो बड़ी-बड़ी," सीता ने यों ही उसे चिढ़ाना चाहा, "तुम मुझे इतनी दूर कैसे ले जा

पाओगे?"

हनुमान को लगा कि सीता को उसके बल के बारे में रत्ती सा भी भान नहीं । अगर होता तो वह ऐसे शब्द इस्तेमाल न करती । इसलिए उसके मन में सीता को भी अपनी शक्ति दिखाने की इच्छा जागृत हुई । वह थोड़ा पीछे हटा और फिर उसने अपने शरीर को बढ़ाना शुरू किया । शरीर बढ़ते-बढ़ते पहाड़ के समान विशाल हो गया । उसका चेहरा भी एकदम लाल हो गया । उसके नख और दाढ़ें भी बहुत बड़ी दीख पड़ने लगीं । उन सब को देखकर सीता ने मन ही मन हिसाब लगाया, 'अगर हनुमान चाहे तो पूरी लंका नगरी को ही उखाड़ कर ले जा सकता है । इसमें कहीं संदेह की गुंजाइश नहीं ।'

सीता के मन के उतार-चढ़ाव को हनुमान देख पा रहा था । इसलिए बोला, "माता, अपने संदेहों को अब दूर फेंक दो । राम-लक्ष्मण की चिंता करो । किसी प्रकार की देरी मत करो ।"

तब सीता हनुमान से बोली, "हे हनुमान तुम्हारी शक्ति का मुझे अंदाज़ा लग गया है । यदि तुम मुझे ले जाने पर तुले हुए ही हो, तो तुम्हें कौन रोक सकता है? कोई राक्षस तुम्हारे सामने टिक नहीं पायेगा । लेकिन तुम्हारा काम बिलकुल निर्विघ्न होना चाहिए । तुम जब वायुवेग से उड़ोगे, तब सागर को नीचे देखकर, हो सकता है, मैं चकरा जाऊं । निस्संदेह तुम महाबली हो, पर तुम मेरी सुरक्षा का इतना बड़ा दायित्व अपने ऊपर क्यों लेना चाहते हो? हो सकता है, राक्षस तुम्हारा पीछा करें और तुम से युद्ध भी करें । उधर तुम राक्षसों का मुकाबला करोगे, और इधर हो सकता है मैं फिर राक्षसों के शिकंजे में आ जाऊं । इससे तो बेहतर यही है कि तुम राम-लक्ष्मण के पास लौट जाओ और मेरे बारे में उन तक अविलंब सूचना पहुंचा दो कि मैं उनकी प्रतीक्षा कर रही हूं । दूसरे, मैं पराये पुरुष को नहीं छूती । तुम यदि मेरे बारे में सूचना ले जाओगे तो मैं तुम्हें छूने से बच जाऊंगी । रावण के साथ जो कुछ हुआ, मजबूरी में हुआ । मैं लाचार थी । मैं कुछ भी नहीं कर पा रही थी ।"

हनुमान को सीता का तर्क ठीक लगा । इसलिए उसने सीता का आदेश पालन करने

का वचन दिया । उसने सीता से कहा कि वह उसे कोई ऐसा चिह्न दे जिससे राम को विश्वास हो जाये कि उसने वास्तव में उससे भेंट की है ।

"मैं तुम्हें एक घटना सुनाती हूं," सीता ने कहा, "वह तुम राम को कह सुनाना । राम को विश्वास हो जायेगा । उनके और मेरे सिवा उसे और कोई नहीं ज़ानता । राम और मैं जब गंगा के किनारे चित्रकुट पर्वत की ईशान दिशा में एक आश्रम में रहते थे तब एक दिन राम मेरी जंघा पर अपना सर रखे सो रहे थे । इतने में वहां एक कौवा आया । उसने चोंच मार-मार कर मुझे घायल कर दिया । मैं लहूलुहान हो गयी । उस खून से राम भी सन गये । उनकी नींद खुली । मुझे खून से लथपथ हुआ देख वह हैरान रह गये । जब उन्हें असलियत का पता चला तो उन्होंने एक दूब का तिनका उठाकर उसे मंत्र-सिद्ध किया और उस कौवे पर उसे छोड़ दिया । वह मंत्र-सिद्ध तिनका अब ब्रह्मास्त्र बन चुका था । वह कौवा भी कोई साधारण कौवा नहीं था, इंद्र का पुत्र था । अब कौवा आगे-आगे और ब्रह्मा उसके पीछे-पीछे । आखिर, जब उसको कोई आश्रय-स्थल नहीं मिला तो वह लौटकर राम के पावों पर गिर पड़ा । ब्रह्मास्त्र का बेकार चले जाना असंभव था । इसलिए उस कौवे को अपनी दायी आंख देनी पड़ी, यद्यपि इससे उसकी जान बच गयी । राम इतने शक्तिशाली हैं । लेकिन वह यहां पहुंचकर मेरे कष्ट क्यों नहीं दूर करते? क्यों मुझे उपेक्षित छोड़ रखा है? मैंने कौन-से पाप किये हैं?"

"माता, राम असीम दुःख में हैं । मुझे भी आपको ढूंढ़ने के कोई कम कष्ट नहीं उठाने पड़े । अब आपको खुश होना चाहिए । दुःखी रहने से कोई लाभ नहीं । राम बहुत जल्द यहां पहुंचेंगे और रावण का अंत करके आपको मुक्त करवायेंगे, और अयोध्या वापस ले जायेंगे," हनुमान ने सांत्वना देते हुए कहा ।

सीता ने फिर कहना शुरू किया, "हनुमान, राम से भेंट होने पर तुम मेरी ओर से उन्हें प्रणाम कहना । लक्ष्मण से कहना कि मैंने उसका कुशल-क्षेम पूछा है । लक्ष्मण श्रेष्ठ है । उसने सब कुछ त्याग दिया और

राम का साथ स्वीकार किया। वह राम के साथ जंगल-जंगल भटका। चाहता तो राजमहल का सुख भोगता।" और यह कहकर उसने अपनी साड़ी के आंचल में बंधी चुड़ामणि को खोलकर हनुमान के हाथ पर रख दिया।

हनुमान अब छोटे आकार में था। उस चूड़ामणि का छोटा छिद्र बालों के लिए था। इसलिए हनुमान ने उसमें अपनी अंगुली डाल दी। फिर उसने सीता की प्रदक्षिणा की और नमस्कार करते हुए रुक गया।

सीता फिर बोली, "हे हनुमान, राम जब यह चूड़ामणि देखेंगे तो फौरन उन्हें मेरी याद ताज़ा हो जायेगी। इस चूड़ामणि से मेरी मां और राजा दशरथ भी जुड़े हुए हैं। खैर, निर्भर इस बात पर करेगा कि तुम समूचा वृत्तांत उन्हें कैसे कह सुनाते हो। असली बात है मेरा कष्ट दूर होना। इसके लिए तुम ही सोचो।" फिर उसने हनुमान के ज़रिये सुग्रीव, उसके मंत्री और उनकी सेना के श्रेष्ठ वीरों के नाम भी शुभकामनाएं भेजीं।

अब सीता के मन में एक और संदेह उठ खड़ा हुआ। इसने हनुमान से कहा, "हनुमान, तुमने तो यह विशल सागर पार कर लिया। पर राम, लक्ष्मण और सेना के अन्य लोग यहां कैसे पहुंच पायेंगे? वे रावण से युद्ध कैसे कर पायेंगे? यदि तुम स्वयं राम के बजाय रावण को मारोगे तो राम को यश कैसे मिल पायेगा?"

सीता के संदेह का निवारण करना हनुमान के लिए ज़रूरी था। बोला, "माता! वानर-भालुओं का नायक सुग्रीव चाहे तो

कुछ भी कर सकता है । उसकी सेना में मेरे जैसे कई वीर और बलिष्ठ योद्धा हैं । जब मैं इस सागर को यों ही लांघ गया, तब उनके लिए तो यह बायें हाथ का खेल है । आप बिला वजह चिंता न करें । इसी में आपका मंगल है ।" फिर सीता से आज्ञा लेकर वह वहां से चल पड़ा ।

वह कुछ ही दूर गया था कि उसे एक बात याद आयी । वह मन ही मन उसके लिए तैयारी करने लगा । काम तो यह छोटा है, उसने सोचा, पर काफी साहस मांगता है । कुछ राक्षसों का वध तो निश्चित रूप से होना चाहिए । तभी उनके हौसले पस्त होंगे । तब हम यह भी जान पायेंगे कि ये कितने पानी में हैं । किष्किंधा लौटना तभी सकारण होगा । हां, अब राक्षसों को ललकारा कैसे जाये?

अशोक वाटिक बड़ी सुंदर थी । नंदन वन की तरह दिखई दे रही थी । संभवतया यह वाटिका रावण को बहुत प्रिय रही होगी । क्यों न इसीका विध्वंस किया जाये? उसने सोचा, तब तो रावण को गुस्सा आयेगा ही । तब वह इस विध्वंसकारी का पता लगाने के लिए अपनी राक्षस सेना भी यहां भेजेगा ही । बस, उस समय अवसर मिलेगा । तब चारों तरफ इनकी लाशों ही लाशें होंगी । तभी वह किष्किंधा लौटेगा ।

यही सोचकर हनुमान ने उस वाटिका के बड़े-बड़े पेड़ों को उखाड़ना शुरू कर दिया । वह उन्हें उखाड़ता जाता था। वहां धराशायी पेड़ों के ढेर लग गये । फिर उसने सरोवरों को भी नष्ट करना शुरू किया । वाटिका में एक अजब दृश्य था । पक्षी भी बिलकुल निराश्रय हो गये थे। वे इधर-उधर उड़ते हुए शोर मचा रहे थे ।

धराशायी पेड़ों और ध्वस्त लताओं के कारण अशोक वाटिका अब नंदन वाटिका नहीं रही थी, वह अब दुःख वाटिका दीख पड़ती थी ।

इतना विध्वंस कर चुकने के बाद हनुमान अशोक वाटिका के मुख्य द्वार के पास पहुंचा और वहां खड़े-खड़े युद्ध के लिए आने वाले राक्षसों की प्रतीक्षा करने लगा ।

पेड़ों के टूटने की आवाज़ और पक्षियों का आर्तनाद लंका-वासियों को भी सुनाई पड़ा । कुछ राक्षसियां उस समय सो रही थीं ।
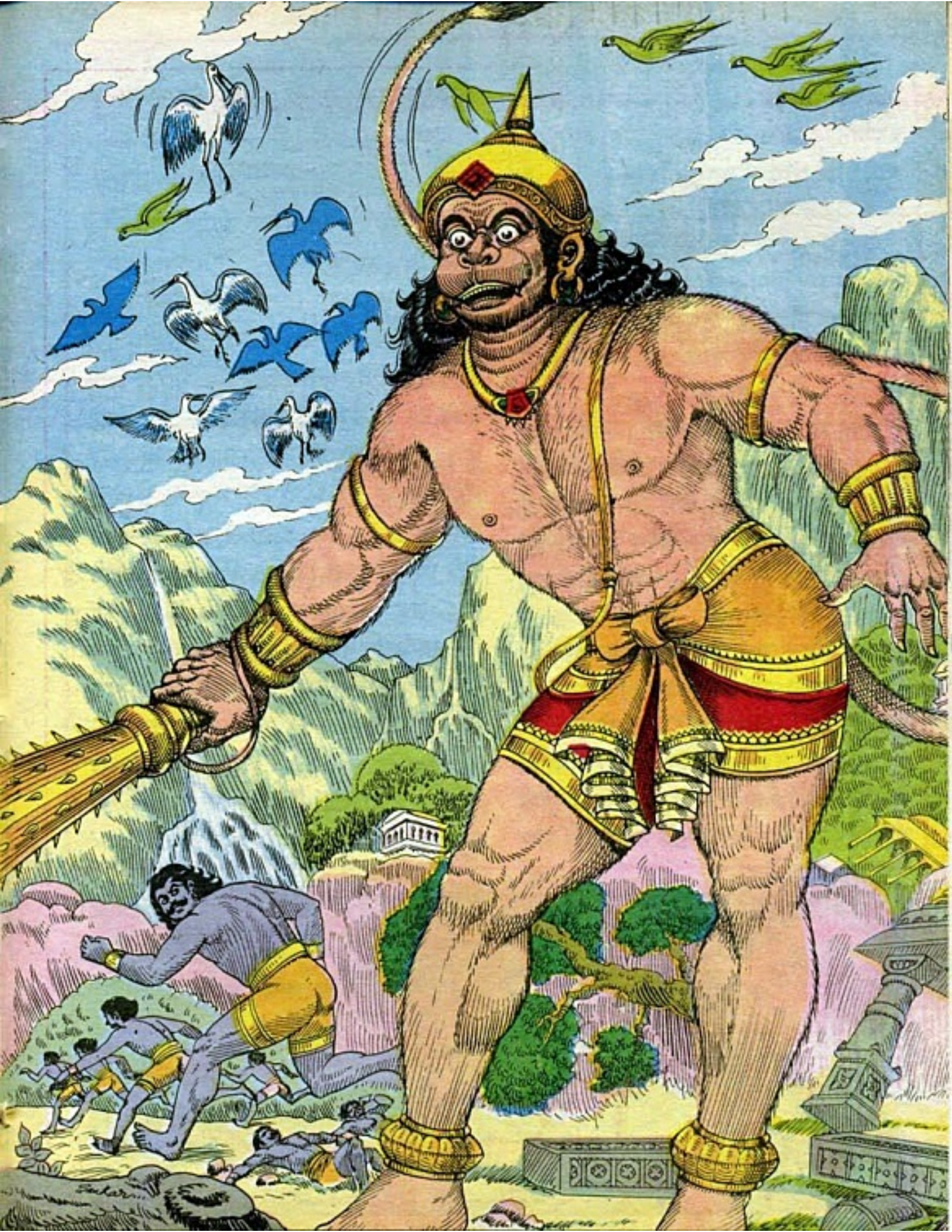
उनकी एकाएक आंख खुली । उन्होंने अपने सामने बृहदाकार एक वानर को देखा । हनुमान ने भी उन्हें देखा । फिर वह अपने शरीर को और और बढ़ाता गया ।

अब राक्षसियां ताड़ गयीं । उन्होंने सीता से उसके बारे में पूछताछ की । "यह यहां कैसे पहुंचा? किसने इसे यहां भेज है! तुम्हारा उससे क्या रिश्ता है? तुम से यह क्या कह रहा था? डरने की कोई बात नहीं । साफ-साफ कह देने में ही भलाई है ।"

सीता का उत्तर विचित्र था । उसने कहा, "राक्षस तरह-तरह के रूप धारण कर लेते हैं । मैं उनके बारे में क्या जानूं? सांप के कितने पांव होते हैं, यह कौन जानता है? संभवतया सांप ही इसके बारे में बता सकता है । इसी प्रकार राक्षसों के बारे में तुम राक्षस ही बता सकते हो । अब तुम इस वानर को ग़ौर से देख लो और मुझे बताओ कि यह कौन है । मुझे तो इसे देखकर डर लगता है!"

जब सीता ने बात को ऐसे पलटा दिया तो राक्षसियां भयभीत हो गयीं । कुछ तो सीता पर आंख रखने के लिए वहीं ठहर गयीं और कुछ चिल्लाती-चीखती हुईं रावण को इसकी खबर देने वहां से भाग खड़ी हुईं ।

जो राक्षसियां रावण को खबर देने उसके महल की ओर दौड़ी थीं, उन्होंने उसे बताया, "एक बड़ा भयानक वानर अशोक वाटिका में आया है । वह बड़ा बलिष्ठ है । वह सीता से ही कुछ बातें करता रहा । बहुत पूछने पर भी सीता नहीं बताती कि वह कौन है । हम नहीं जानती कि वह वानर का रूप धारण किये देवेंद्र का दूत है या कि कुबेर का कोई गुप्तचर है । हो सकता है वह राम का ही कोई संदेशवाहक हो । उसने समूची अशोक वाटिका तबाह कर डाली है । सिर्फ उसने वही पेड़ छोड़ा है जिसके नीचे सीता बैठती है । अब अशोकवाटिका के तमाम पेड़ धराशायी हो गये है । उस वानर का पकड़े जाना अत्यावश्यक है । उसे कड़ा दंड मिलना चाहिए । वह क्योंकि सीता से ही बातचीत करता था, इसलिए उसे इस अपराध में भी दंडित किया जा सकता है । पर तुरंत कार्रवाई कीजिए महाराज!"

पलंग का राज़

एक समय नेपाल पर धर्मसिंधु नाम के राजा का शासन था । धर्मसिंधु बड़ा परोपकारी और त्यागी राजा था । युवास्था में तो वह दूर-दूर तक छद्मवेश धारण करके यात्राएं करता और उस दौरान वह अक्सर पैदल ही चलता था ।

एक बार धर्मसिंधु कुछ दिनों की यात्रा पर अकेला ही निकला और छद्मवेश में एक पर्वतीय प्रांतर में घूमते-घूमते जा पहुंचा । वह अब ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों की घाटी में घूम रहा था कि राह भटक गया । उसे कोई रास्ता दीख नहीं पड़ रहा था ।

वह असमंजस में पड़ गया । उसने इधर-उधर खूब नज़र दौड़ायी कि उसे कोई दिख जाये, पर उस बीहड़ प्रांतर में आदमी का कहीं निशान तक न था । फिर एकाएक एक आजानुबाहु व्यक्ति उसे दीख पड़ा । वह सीधा उसी के पास चला आ रहा था । उसने खूब चमकीले कपड़े पहने हुए थे । हाथ में उसके एक लाठी थी । दिखने में वह बड़ा ही भला और विनम्र था । वह सुंदर तो था ही, स्वस्थ भी था ।

आम कपड़ों में दिखाई देने वाले धर्मसिंधु को देखकर उसने कहा, ''बेटे, तुम कौन हो? कहां से आ रहे हो? तुम्हारा चेहरा सूखा-सूखा क्यों है? तुम तो बहुत थके हुए दिखाई दे रहे हो? तुम्हें कहां जाना है? आओ, मेरे साथ चलो । मेरे यहां विश्राम कर लो । अच्छा भोजन खाओ । तुम्हारे जैसे लोग कभी-कभी बिना ठीक से खाये लंबी-लंबी यात्राएं करने पर उतारू रहते हैं । बेटे, यात्रियों की सेवा करना मैं अपना धर्म समझता हूं । मेरे यहां भोजन की बढ़िया व्यवस्था है । सोने के लिए बहुत ही आरामदेह पलंग है । यह काम भगवान् की सेवा समझकर करता हूं । चलो, तुम मेरे घर

नेपाल की लोक कथा

भला, इतने स्नेह से अतिथि-सत्कार करनेवाले व्यक्ति का आतिथ्य अस्वीकार भी कैसे किया जा सकता है? इस लिए धर्मसिंधु चुपके-चुपके उसके पीछे चलने लगा ।

अब दोनों मिलकर थोड़ी चढ़ाई पार कर रहे थे कि नीचे घाटी में उन्हें कुछ लोगों की आवाज़ें सुन पड़ीं । व्यापारियों का काफिला था । व्यापारी अपने घोड़ों-खच्चरों पर सामान लादे बढ़े चले जा रहे थे । धर्मसिंधु को वहीं रुकने को कहकर वह व्यक्ति बड़ी तेज़ी से नीचे घाटी में उतरा और बहुत जल्दी ही उसने उस काफिले के लोगों से संपर्क स्थापित कर लिया ।

फिर वह भला सा दिखने वाला उनसे बोला, "मेरे आदरणीयो, आप लोग इस वक्त भी यात्रा का कष्ट क्यों उठा रहे हैं? यह समय तो विश्राम करने का है । चलो, मेरे घर चलो । वहां गरम-गरम भोजन आप लोगों का इंतज़ार कर रहा है । आराम करने के लिए काफी जगह है । आरम कर लो, और फिर जब सुबह हो जाये तो अपनी राह पकड़ो । ओह, आज कितना अच्छा दिन है! मैं बड़ा भाग्यशाली हूं । आज अतिथि-सत्कार का मुझे खूब सुअवसर मिला है!"

वाकई उस काफिले के लोगों ने भी उसके आतिथ्य-आह्वान स्वीकार कर लिया था!

वह व्यक्ति अभी लौटकर धर्मसिंधु तक पहुंचा नहीं था कि धर्मसिंधु को वहां एक बूढ़ा दिखाई दिया । बूढ़े के सर पर लकड़ियों का एक गट्ठर था जिसके बोझ तले वह दबा जा रहा

चलो ।"

अब यह स्पष्ट था कि वह व्यक्ति खूब जमकर बात कर लेता था ।

धर्मसिंधु ने अब उसे अपनी यात्रा के बारे में बताया ।

तब वह भला दिखने वाला व्यक्ति बोला, "अरे पगले, तुम तो बहुत दूर चले आये हो । रास्ता तो कहीं पहले ही छूट गया था । खैर, तुम अब चिंता मत करो । तुम भोजन करके विश्राम कर लो । मैं तुम्हें सही राह पर लगा दूंगा ।"

उस भले-से दिखने वाले व्यक्ति की बातें सुनकर धर्मसिंधु आश्वस्त हो गया और उसका आतिथ्य स्वीकार करने को फौरन तैयार हो गया ।

था । लकड़ियों का वह गट्ठर उस बूढ़े के सिर से नीचे गिर गया ।

धर्मसिंधु उसकी सहायता करने के उदेश्य से आगे बढ़ा, तभी उस बूढ़े ने उससे कई तरह के प्रश्न किये ।

धर्मसिंधु ने उस बूढ़े को अपनी यात्रा के बारे में बहुत कुछ बताया, लेकिन उसने यह ज़ाहिर नहीं होने दिया कि वह उसी देश का राजा है । हां, उसने उस भले-से दिखने वाले व्यक्ति के बारे में ज़रूर बताया, "दादा, वह तो बहुत ही भला दिखता है । रात के इस समय वह मुझे अपने घर ले जा रहा है! वह कहता है कि अतिथिसेवा करना भगवान की सेवा वह समझता है ।"

धर्मसिंधु की बात सुनकर बूढ़े ने ठंडी आह भरी और फिर बोला, "अरे उस दुष्ट ने तुम्हें भी फांस लिया? वह तो मायावी राक्षस है, उसे भला बिलकुल मत समझो । वह सब को छलता है । तुम्हें भी छलेगा । जिस पलंग पर तुम्हें आराम करने को कह रहा था, वह कोई साधारण पलंग नहीं है । वह जादुई पलंग है ।" इतना कहकर उस बूढ़े ने एक और ठंडी सांस ली ।

पर इससे धर्मसिंधु की उत्सुकता मिटी नहीं । उसने उस छलावे के बारे में और जानना चाहा ।

तब उस बूढ़े ने धर्मसिंधु से कहा, "बेटा, इस मायावी रक्षस का नाम धूर्त्तकेतु है । यह मन चाहा सोना प्राप्त करना चाहता था । इसने असुरशक्ति नाम की एक देवी की खूब

आराधना की । देवी खुश होकर इसके समक्ष प्रकट हुई । उसने कहा– 'वत्स, मैं तुम्हारा मनोरथ जानती हूं । तुम्हारी इच्छा-पूर्ति का मार्ग बता रही हूं । सुनो, मैं तुम्हें एक जादू का पलंग दूंगी । इसे 'भल्लूक तल्प' कहा जाता है । इसके गद्दे भालू के रोयों से बने हैं । यह बहुत ही आरामदेह है । जो व्यक्ति इस पलंग पर लेटेगा, उसका कद यदि इस पलंग के ठीक बराबर हो, तुम उसे मेरे मंदिर में ले आना और उसकी मुझे बलि दे देना । फिर तुम्हारा मनोरथ पूरा होगा, तुम्हें सोना बनाने की शक्ति मिल जायेगी ।' और इतना कहकर वह देवी अदृश्य हो गयी ।

"धूर्त्तकेतु खुश हुआ । वह मंदिर से उसे भालू के रोयें वाले पलंग को ले आया । फिर

आने वाले कई यात्री अपनी जान गंवा चुके हैं। लेकिन पलंग की लंबाई के मुताबिक अभी तक एक भी यात्री नहीं मिला। अगर कोई है तो वह मैं हूं... ।" इतना कहकर वह बूढ़ा चुप हो गया।

तब धर्मसिंधु ने आश्चर्य से पूछा, "दादा, क्या यह बात उस राक्षास को मालूम नहीं? यदि वह जानता है तब उसने तुम्हें कैसे बख्श दिया? तुम्हारी उसने असुरशक्ति को बलि क्यों नहीं दी?"

यह सवाल थोड़ा टेढ़ा था। इसका बूढ़े पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा। वह बोला, "बेटा, कई वर्ष पहले मैं भी तुम्हारी तरह इसी रास्ते से यात्रा कर रहा था। धूर्त्तकेतु ने बड़े प्यार से मुझे अपने भवन में बुलाया और मेरा खूब अतिथि-सत्कार किया। फिर उसने मुझे उस पलंग पर सोने को कहा और स्वयं वहां से चला गया। मैं उस पलंग पर लेट गया। मैंने अपनी टांगें फैलायीं तो वे उस पलंग से लगभग एक हाथ लंबी थीं। मुझे अजीब लगा। बहुत देर तक मुझे नींद नहीं आयी। मैं उठ बैठा और तकिये को उठाकर मैंने सिरहाने से पैताने रख लिया। तब मैं उसी तरह लेट गया। ताज्जुब! अब मेरी लंबाई पलंग की लंबाई के ऐन बराबर थी। न इंच कम, न इंच ज़्यादा। अब मुझे पलंग के रहस्य का पता चल गया था। नींद तो आ नहीं रही थी। इसलिए मैं वैसे ही आंखे मूंदे लेटा रहा।

"आधी रात के समय धूर्त्तकेतु आया। उसने मुझे पलंग पर लेटे देखा तो बहुत खुश

उसने एक भवन तैयार करवाया, और इस घाटी के पास रहते हुए उस यात्री की प्रतीक्षा करने लगा जिसकी लंबाई इस पलंग के बराबर हो। वह भोजन कराने के बहाने भूले-भटके यात्रियों को यहां ले आता और फिर भोजन कराने के बाद उस पलंग की लंबी-चौड़ी प्रशंसा करके उस पर उन्हें लिटा देता। जिस यात्री की लंबाई उस पलंग से अधिक होती, उसके पैरों को मोड़कर वह बांध देता ताकि वे छोटे हो जायें, और जिस की लंबाई कम होगी, उसकी टांगों को खूब खींचता ताकि वे लंबी हो जायें। इस तरह उन यात्रियों को खूब यातनाएं भोगनी पड़तीं और कई बार तो यातना भोगते-भोगते उनकी मृत्यु तक हो जाती। इस तरह यहां

हुआ । मेरा कद पलंग की लंबाई के बराबर था । अब वह सहज ही देवी असुरशक्ति को मेरी बलि दे सकता था । उस दिन से वह बड़े प्यार से मुझे देखने लगा । वह मेरी खूब सेवा करता । बलि के लिए अच्छे मुहूर्त्त के इंतज़ार में था वह । यह बात मुझे वहां के अनुचरों ने बता दी थी ।

''बलि के एक दिन पहले, आधी रात के समय, धूर्त्तकेतु पलंग वाले कक्ष में आया और उसने मुझे सोया हुआ समझ कर गौर से देखा । तब मैं जान-बूझकर पलंग के सिरहाने की तरफ ही लेटा हुआ था और मेरा कद पलंग से एक हाथ अधिक था, यह देखते ही धूर्त्तकेतु आश्चर्य में पड़ गया । उसकी समझ में नहीं आया कि पहले पलंग की लंबाई के बराबर दिखने वाला व्यक्ति अब एकाएक उससे एक हाथ लंबा कैसे हो गया!

''वह जादू का असर रखने वाला पलंग तो ले आया था, पर उसका रहस्य देवी असुरशक्ति ने उसे नहीं बताया था । वह उस रहस्य से कोसों दूर रहा । उसने यह रहस्य मुझ से जानने की कोशिश की, लेकिन मैंने भी इसे अपने तक ही रखा । उसने मुझे बहुत सताया, कई तरह की तकलीफ़ें दीं, पर मैं टस से मस नहीं हुआ । अब धूर्त्तकेतु मुझ से बिलकुल ऊब चुका था । उसने मुझसे दास का-सा बरताव करना शुरू कर दिया । वह तमाम काम मुझ पर ही लादने लगा । कभी कुएं से मैं बड़े-बड़े बर्तन भरकर पानी लाता, कभी जंगल में वह मुझे लकड़ियां काटने

भेजता और मैं लकड़ियों के बड़े-बड़े गट्ठर अपने सर पर लादकर लाता । उसने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की कि मैं वह राज़ किसी तरह उसके सामने उगल दूं, पर वह नाकामयाब रहा । आज तक वह राज़ मुझ तक ही बंद है । आज तक उस पलंग की लंबाई वाला कोई व्यक्ति आया नहीं, और आज तक उसकी देवी असुरशक्ति को बलि देने की आकांक्षा पूरी हुई नहीं ।''

वह बूढ़ा व्यक्ति धर्मसिंधु को ये बातें बता ही रहा था कि तभी धूर्त्तकेतु की वहां व्यापारियों के साथ पहुंचने की आहट सुन पड़ी । बूढ़े ने अब बिना वक्त खोये धर्मसिंधु को वह रहस्य बता दिया और धर्मसिंधु उसे पाकर खुशी से भर उठा ।

उस दिन आये अतिथियों में धूर्त्तकेतु को धर्मसिंधु ही सब से सुंदर और पलंग की लंबाई के अनुरूप दीख पड़ा । इसलिए उसे राजसी ठाठ के साथ भोजन कराया गया और फिर उस पलंग पर लेटने को कहा गया । धर्मसिंधु ने ऐसे दिखावा किया जैसे ऐसे पलंग पर वह पहले कभी नहीं सोया । उसने अपने पैताने तकिया डाला और लेट गया ।

आधी रात हुई तो धूर्त्तकेतु उस कक्ष में आया । धर्मसिंधु पर जैसे ही उसकी आंख पड़ी, वह खुशी से उछल पड़ा । धर्मसिंधु बिलकुल उस पलंग के बराबर था । उसकी खुशी का कोई ठिकाना न था । वह उस काफिले वाले व्यापारियों के बारे में एकदम भूल ही गया । उसकी पूरी तवज्जुह अब धर्मसिंधु पर थी । वह उसकी हर सुविधा पूरी करने में लगा था ।

इस बीच जब कभी धूर्त्तकेतु इधर-उधर होता, धर्मसिंधु फौरन उस बूढ़े से संपर्क करता और उससे सलाह-मशविरा लेता ।

अब दोनों ने मिलकर एक योजना बनायी । उस योजना के अनुसार धर्मसिंधु ने धूर्त्तकेतु को अपनी बातों में फांस लिया । और फिर उसे उस पलंग पर लिटा दिया । उस वक्त तकिया पैरों की तरफ था । इसलिए धूर्त्तकेतु की लंबाई पलंग की लंबाई के ऐन बराबर थी । वह ऐसे सो रहा था मानों घोड़े बेचकर सोया हो । धर्मसिंधु और उस बूढ़े व्यक्ति ने मिलकर उस पलंग को किसी तरह मंदिर में पहुंचाया । यह काम उन दोनों ने मिलकर बड़ी सावधानी से किया ।

अब धर्मसिंधु तलवार उठाकर धूर्त्तकेत का सर उड़ाने को ही था कि देवी असुरशक्ति वहां एकाएक प्रकट हुई । उसने धर्मसिंधु को उसका सर उड़ाने से रोक दिया, लेकिन उसने उसे एक उपाय बताया और उसे लौट जाने को कहा । फिर देवीने धर्मसिंधु को सोना बनाने का मंत्र भी दे दिया ।

धर्मसिंधु वहां से चलने को था तो उसने सोना बनाने का मंत्र उस बूढ़े को सिखा दिया और कहा कि वह वहीं रहकर भूले-भटके यात्रियों को राहत पहुंचाये ।

शार्दूलमंत्र

एक गांव में एक ब्राह्मण रहता था। उसका नाम रामशर्मा था। बहुत दिनों से उसके मन में एक कौतूहल कुलबुला रहा था, वह था आदमी को बाघ में बदल देने वाले शार्दूलमंत्र को सीखने के प्रति । लेकिन वह नहीं जानता था कि ऐसा मंत्र सिखानेवाला उसे मिलेगा कहां!

एक दिन उसे पता चला कि पड़ोसी गांव के मठ में एक साधु आया है जो कुछ दिनों तक वहां ठहरेगा, वह एक अच्छा मंत्रवेत्ता भी है। रामशर्मा उसे मिलने चल दिया, उसने उस साधु को अपने घर पर भोजन के लिए आमंत्रित किया।

साधु ने रामशर्मा का निमंत्रण स्वीकार कर लिया, और उसके घर पहुंचकर भर-पेट भोजन किया। फिर दोनों में खूब जमकर बातें हुई और रामशर्मा ने उपयुक्त अवसर देखकर उसे अपने मन की बात बता दी।

रामशर्मा की फरमाइश सुनकर साधु धर्मसंकट में पड़ गया और बोला, "वह मंत्र बहुत ही खतरनाक है। इसीलिए उसे हर किसी को सिखाया नहीं जाता।"

लेकिन रामशर्मा तो अपने हठ पर अड़ा हुआ था। उसके हठ को देखकर साधु थोड़ी देर कुछ सोचता रहा, और आखिर उसकी इच्छा पूरी करने को तैयार हो गया। अंत में बोला, "देखो, मैं तुम्हें शार्दूलमंत्र सिखा दूंगा, लेकिन तुम केवल उसी को बाघ में बदलोगे जो स्वयं, बाघ बनना चाहता हो।"

अब साधु ने रामशर्मा को एकांत में बिठाकर दो मंत्रों के बारे में प्रवचन दिया और फिर दो तरह के अक्षत उसके हाथ में देते हुए बोला, "तो सुनो शर्मा, पहले मंत्र का उच्चारण करके लाल रंग का अक्षत जिस भी किसी व्यक्ति पर डालोगे, वह तुरंत बाघ में परिवर्तित हो जायेगा। लेकिन उसके चेहरे

२५ वर्ष पूर्व चंदामामा में प्रकाशित कहानी

पर चिह्न-स्वरूप एक दाग रह जायेगा जिससे तुम्हें पता चले कि यही वह बाघ है जिसे तुमने आदमी से बदला है। तुम्हारा मनोरंजन जैसे ही समाप्त हो, तुम दूसरे मंत्र का प्रयोग करना और पीले अक्षत उस पर इस ढंग से फेंकना कि वह उसके उस चिह्न के रूप में दिखने वाले दाग को छुएं। इससे वह बाघ वापस आदमी बन जायेगा। तुम्हारे मंत्र से जैसे ही कोई व्यक्ति बाघ में परिवर्तित होगा, उसमें मानवोचित ज्ञान नहीं रहेगा। तुम्हें काफी सावधानी बरतनी होगी।" और यह कहकर वह साधु चला गया।

रामशर्मा ने साधु की सारी बातें अपनी पत्नी को बतायीं। रामशर्मा की पत्नी हठ पकड़ बैठी कि उसे बाघ दिखाया जाये। रामशर्मा भी चाहता था कि वह उन मंत्रों को जल्दी से जल्दी परखे।

उसने अपनी पत्नी से कहा, "देखो, अगर मैं किसी से कहूंगा कि मैं उसे बाघ में बदलना चाहता हूं तो वह कभी नहीं मानेगा। और जब तक वह स्वयं नहीं चाहेगा, मैं उसे बाघ में बदल भी नहीं सकता। इसलिए तुम मुझे ही बाघ में बदल दो। मुझे यह मंज़ूर भी है। और जैसे ही तुम्हारी यह इच्छा पूरी हो जाये तुम फौरन मुझे फिर से आदमी बना देना।" इतना कहकर रामशर्मा ने वे दोनों मंत्र अपनी पत्नी को सिखा दिये और वे दोनों अक्षत भी उसे दे दिये।

रामशर्मा को इसके बाद की भी चिंता थी। उसे पता था कि जब वह बाघ बन जायेगा तो उसका मानवोचित ज्ञान खत्म हो चुका होगा। इसलिए उसने अपने कमरे के सब दरवाजे बंद कर दिये और अपनी पत्नी को टांड़ पर चढ़ा दिया और स्वयं वहीं टांड़ के नीचे तैयार हो कर बैठ गया।

रामशर्मा की पत्नी के भीतर कौतूहल तो था ही। इसलिए उसने तुरंत पहला मंत्र पढ़ना शुरू कर दिया और वह लाल अक्षत उस पर फेंका। अक्षत का फेंकना था कि उसका पति बाघ बन गया, और जैसे ही वह बाघ बना, उसने भयानक रूप से गरज़ना शुरू कर दिया। दरवाज़े सब बंद थे। बाहर जाने का उसे कोई रास्ता मिल नहीं रहा था। इसलिए पंजे मार-मार कर वह दरवाज़े तोड़ने लगा।

बाघ के रूप में परिवर्तित हुए अपने पति को देखकर रामशर्मा की पत्नी एकदम घबरा गयी और दूसरे मंत्र का पाठ एकदम भूल गयी। लेकिन पीले अक्षत को बार-बार उसके चिह्न पर फेंके जा रही थी और कोई असर नहीं हो पा रहा था।

थोड़ी ही देर में बाघ बना रामशर्मा एक दरवाज़ा तोड़ने में सफल हो गया और देखते ही देखते वह गांव के पास के जंगल में भाग चला गया।

बाघ के चले जाने के बाद रामशर्मा की पत्नी की हालत सुधरी। डर और घबराहट के चंगुल से जैसे वह मुक्त हुई, उसे दूसरे मंत्र का स्मरण हो आया। पर अब उसका लाभ क्या था? बाघ तो कब का जंगल में लोप हो चुका था।

अपनी बेवकूफी पर रामशर्मा की पत्नी अब उदास रहती। उसे हमेशा अपने पति की याद सताती। इस प्रकार दो महीने बीत गये। इसी बीच रामशर्मा की पत्नी का छोटा भाई वहां आया। वह उसे लेकर जंगल की ओर चल पड़ी। वह बाघ में परिवर्तित हुए अपने पति को खोजना चाहती थी।

उन्हीं दिनों राजा को समाचार मिला कि जंगल में एक ऐसा बाघ है जिसके चेहरे पर एक दाग़ है। वह गांवों के लोगों पर हमला करता रहता है, लोगों ने ऐसा बाघ पहली बार देखा है।

अपनी प्रजा की रक्षा करना राजा का कर्त्तव्य था। इसलिए उस बाघ को मारने के लिए राजा सपरिवार जंगल के लिए चल पड़ा।

जंगल में उसने बाघ की खूब तलाश की, लेकिन काफी ढूंढ़ने पर भी वह कहीं नहीं मिला। राजा अब थक गया था। इसलिए वह एक पेड़ के नीचे विश्राम करने लगा। विश्राम करने के लिए अभी वह लेटा ही था कि उसे अपने पीछे किसी बाघ के दहाड़ने की आवाज सुन पड़ी।

राजा ने फौरन घूमकर देखा। यह वही दागवाला बाघ था। इसे ही वह खोज रहा था। वह उस से बचाव की अभी सोच ही रहा था कि बाघ ने तुरंत अपने पंजे उठाये और राजा पर झपट पड़ा।

लेकिन यह क्या? जैसे ही बाघ का पंजा राजा के गले पर पड़ा, वैसे ही वह एक ब्राह्मण में बदल गया। अब राजा के गले पर एक बाघ का पंजा नहीं, बल्कि एक ब्राह्मण का कसता हाथ था।

जब तक रामशर्मा बाघ के रूप में था, उसे उस अवधि का कोई ज्ञान नहीं था। लेकिन अब जब उसने देखा कि उसका हाथ राजा के गले पर है तो वह पसीने-पसीने हो गया और राजा के पैरों पर गिरकर क्षमा मांगने लगा। राजा की समझ में कुछ नहीं आया। वह एकदम हैरान-परेशान हो गया।

उसी समय पास के एक पेड़ से रामशर्मा की पत्नी उतरी। राजा ने सोचा, वह स्त्री वनदेवी होगी और उसी ने उसकी जान बचायी होगी। इसलिए राजा ने उसे नमस्कार किया।

प्रत्युत्तर में रामशर्मा की पत्नी ने भी उसे नमस्कार किया और शुरू से लेकर आखिर तक सारी कहानी कह सुनायी। वह भी दाग़ वाले बाघ की खोज में आयी थी, और जैसे ही उसने उसे देखा था, वह एक पेड़ पर चढ़ गयी थी, और जैसे ही बाघ राजा पर झपटा था, वैसे ही उसने मंत्रोच्चारण के साथ पीले अक्षत उस पर फेंके थे। इसीलिए राजा को आहत करने से पहले ही बाघ असली रूप में आ गया।

राजा रामशर्मा की पत्नी पर बहुत खुश था, क्योंकि उसने उसकी जान बचायी थी। इसी खुशी में उसने रामशर्मा को अपने दरबार में नौकरी दे दी।

कछुए के आंसू
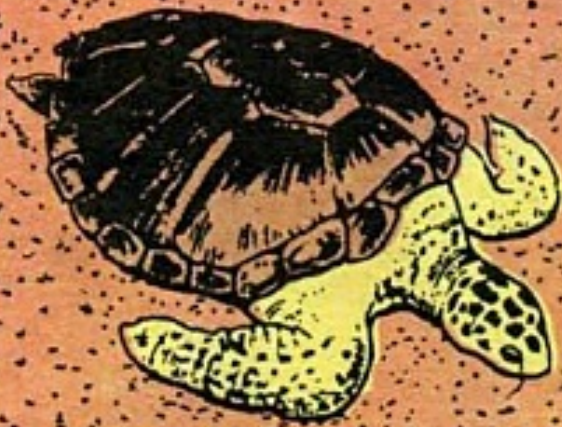
हरा कछुआ एक बहुत ही भारी जीव है। ज़मीन पर चलने में उसे बहुत तकलीफ होती है। इसकी आंखों से लगातार पानी बहता रहता है। ऐसे लगता है जैसे कि वह हर वक्त रोता रहता हो। लेकिन वास्तविकता यह नहीं है। वास्तविकता यह है कि सागर में रहते समय उसकी आंखों में अतिरिक्त नमक चला जाता है जिसे वह अपने आंसुओं से धो डालता है।

रे—एक खतरनाक मछली

एक मछली का नाम है 'स्टिंग रे'। यह दूसरी मछलियों की अपेक्षा आदमी को अधिक घायल कर सकती है। यह अपने को अक्सर उथले पानी की रेत में छिपाकर रखती है, और जब कोई व्यक्ति इसकी पूंछ पर पांव रख दे तो इस तरह डंक चुभोती है कि उस व्यक्ति की हालत खराब हो जाती है और कई बार तो उसकी मृत्यु भी हो जाती है।

जानवर जो तैर नहीं सकता

तुम्हें ताज्जुब तो नहीं हो रहा? तैर न पानेवाले उस जानवर का नाम है गोरिल्ला।

TALLEST
1. What was the height of the tallest man in the world?
2. Move three buttons and make the triangle face the other way.
3. What is the distance between the Earth and the Moon?
4. Name the family of Angles.
FREE GIFT for the first 1000 all correct answers.
OMEGA
S·O·N·Y
OMEGA
Sony
MATHEMATICAL DRAWING INSTRUMENTS
ART NO 1635
Hurry, your answers must reach us before 31st August, 1991.
OMEGA
GEOMETRY MADE FUN
Please attach this advertisement with your answers and mail them to:
Allied Instruments Pvt. Ltd. 30 CD, Govt. Industrial Estate, Kandivli (W), Bombay 400 067.
3 Brothers/OS/2691

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ अक्तूबर १९९१ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

G. Srinivasamurthy

J. Sarojini

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ १० अगस्त '९१ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६

जून १९९१ की प्रतियोगिता के परिणाम

प्रथम फोटो : भाई बहन चले हैं खाने !

द्वितीय फोटो : मां आयेगी कब न जाने !!

प्रेषक : अभिनन्दन प्रसाद गुप्ता, द्वारा श्रीराम भंडार, १३४, गोलबाजार, खड़गपुर।

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

चन्दा भेजने का पता :

चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी, मद्रास-६०००२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

PAINT YOUR OWN DREAMS!

AND WIN A FREE TRIP TO THE USSR!

A special contest for JUNIOR QUEST subscribers!

Hi kids! What's your DREAM WORLD like? Is it a world where stormy seas turn into milk and honey? And dark clouds become beautiful butterflies?

Well, here's your chance to say why friends, animals, flowers, laughter and other beautiful things make this world a great place to live in!

Just make a colourful picture of your own DREAM WORLD. Use paints, colour pencils, crayons or felt pens. (Maximum paper size 20 cm.x 45 cm.) On another paper complete the following : " The world would be a better place if ....". (Less than 50 words, in English only).

Remember, even the most impossible dream could be a winner. And some day, perhaps,it could even come true!

Last date - September 30, 1991

Mail your entries to:
DREAM WORLD CONTEST
C/O Junior Quest, Chandamama Building,
Vadapalani, Madras 600 026.

DREAM WORLD PRIZES

- **One free trip to the USSR and back**
- **50 Gift cheques of Rs 100 each**
- **Extra-special JQ T-shirts**

RULES • Contest open to all current Junior Quest subscribers, and to all those who subscribe before September 30, 1991. • All entries must be accompanied by the special Dream World Contest coupon, available in the July, August and September 1991 issues of Junior Quest.Along with your current subscription number or a subscription coupon. • In case of a tie, a lucky draw decides who wins the free trip to the USSR. • The decision of the judges will be final and binding • We will not be responsible for entries lost or damaged. Incomplete entries will be disqualified. • Entries become the property of the Chandamama Vijaya Combines Publications Division, with the right to publish any of the winning entries. • The results will be published in a future issue of Junior Quest. • The winner is responsible for all passport and Reserve Bank formalities.

HTA 7932

CHANDAMAMA (Hindi) August 1991 Regd. No. M. 5452